❀ महाभगवते श्रीगौरचन्द्राय नमः ❀

❀ प्रार्थना ❀

श्रीलनरोत्तमदासठाकुर महाशय की

(१) आचार्य्य श्री बालकृष्णगोस्वामिजी विरचित
हिन्दीभाषापद्यानुवाद ।
(२) श्रीलनरोत्तमदासठाकुर महाशय की
मूल प्रार्थना (बंगभाषापद्य में)
(३) श्रीप्रियाशरणदासजीविरचित
हिन्दी भाषापद्यानुवाद

(प्रथमावृत्तिः १०००
श्रीरामनवमी)
संवत् २०१४

प्रकाशक :
कृष्णदास,
(कुसुमसरोवर वाले)
(मथुरा)

भज--निताइ गौर राधेश्याम।

जप--हरे कृष्ण हरे राम॥

परमाराध्य, संकीर्त्तन प्रचारक, प्रेममयविग्रह, श्रीराधा-
रमणचरणदासदेव (बड़े बाबाजी) के अनुगत,
नित्यधामगत, श्रीगुरुदेव बाबाजिमहाराज
१०८ श्री बाबा (रामदासजी) के
पुनीत स्मरण में यह ग्रन्थ
समर्पित है।

'प्रार्थना' पर दो शब्द !

प्रस्तुत मूल पुस्तक'प्रार्थना'ग्रन्थ के रचयिता श्रीनरोत्तमदास ठाकुर महाशय का जन्म शकाब्द १४४५ माघ पूर्णिमा में कायस्थ कुल-भूषण श्रीमान् कृष्णानन्ददत्त जी के घर में जो राजशाही ज़िलान्तर्गत गोपालपुर के परगनाधिपति थे, श्रीनारायणी देवी के गर्भ से हुआ था। गोपालपुर की राजधानी पद्मावती नदी के तट पर खेतड़ी नामक स्थान में थी। आप बाल्यकाल से ही श्रीगौराङ्गदेव के अनुरक्त थे; इनको एक बार स्वप्नादेश हुआ कि वृन्दावन में अमरघाट पर श्रीलोकनाथ जी गोस्वामी महाशय का शिष्यत्व ग्रहण करो। इस पर यह गृह त्याग करके आवेश पैदल चलकर बहुत कष्ट सहते हुए वृन्दावन आकर श्रीगोस्वामिपाद के सम्मुख उपस्थित हुए और अपने स्वप्नादेश की बात कहकर शिष्यरूप में उन्हें स्वीकार करने की प्रार्थना की। श्रीलोकनाथजी महाराज ने भी अपनी गुप्त प्रतिज्ञा प्रगट करते हुए कहा कि आजन्म किसी को शिष्य ग्रहण नहीं करूँगा तथा श्रीमहाप्रभु ने तुम्हारे प्रति हमें कोई स्वप्नादेश नहीं दिया है। अत: श्रीनरोत्तमजी पास के ही एक जंगल में छिपकर रहने लगे और अपने मनोनीत भावी गुरुदेव की पुरीषादि उठाकर फेंकना तथा मार्गमार्जनादि की नीचसेवा गुप्त रूप से एक वर्ष तक करते रहे। अन्त में श्रीगुरुदेव की दृष्टि एक बार उन पर पड़ ही तो गई, इनकी गुप्त सेवा से अति द्रवीभूत होकर अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर इन्हें अपना शिष्य रूप से वरण कर लिया। वृन्दावन में यह कुछ दिन तक श्रीगुरुदेव पास उनकी सेवा में रहे।

शकाब्द १५०४ में जब श्रीजीव गोस्वामी जी की आज्ञानुसार श्रीश्रीनिवासाचार्य्य व श्रीश्यामानन्द प्रभु, "गोस्वामी-गण विरचित ग्रन्थों" को बंगदेश में प्रचारार्थ ले जाने लगे, तब श्रीनरोत्तमदास जी ठाकुर महाशय भी उनके साथ ही बंगदेश को लौट गये। तत्पश्चात् बंगदेश में खेतड़ी से एक कोस पर इन्होंने अपना आश्रम बनाया, जो अभी भी 'भजम-टोली' नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ आपने श्रीगौराङ्ग,

श्रीवल्लभीकान्त, श्रीकृष्ण, श्रीब्रजमोहन, श्रीराधामोहन तथा श्रीराधाकान्त नाम के छः विग्रह स्थापित किये। श्रीललोकनाथ गोस्वामी तथा श्रीनरोत्तम ठाकुर महाशय दोनों की समाधि श्रीगोकुलानन्द मन्दिर वृन्दावन में उपस्थित हैं।

इनके रचे हुए 'प्रेमभक्तिचन्द्रिका' व 'प्रार्थना' गौड़ीय वैष्णव समाज में अति प्रसिद्ध हैं। इन दोनों ग्रन्थों को प्रत्येक वैष्णव कंठ करके रखता है एवं उत्सवादि तथा नित्य कीर्त्तनादि में श्रीठाकुर महाशय की प्रार्थना तो अवश्य ही गान की जाती है। यह छोटीसी पुस्तक वास्तव में माध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदाय की शुद्ध रागानुगा भजन-मार्ग-दर्शिका (प्रैक्टिकैल गाइड) ही है। संक्षेप में गौड़ीय-भजन प्रणाली का सार इसमें प्रस्तुत किया गया है। एक-एक पद के पाठ मात्र से ही पाठक का मनः स्तर क्रमशः ऊँचा हो उठता हुआ प्रतीत होता है—वास्तव में यह वैष्णवों का कण्ठहार ही है। इस पुस्तक की उपादेयता निम्न उद्धरण से भली प्रकार सिद्ध होती है:—

ऐसा कहते हैं कि महात्मा श्रीशिशिरकुमार घोष (अँग्रेजी अमृत-बाजार तथा बंगीय आनन्द बाजार पत्रों के सम्पादक-अध्यक्ष) ने नवद्वीपस्थित सिद्ध बाबा श्रीचैतन्यदासजी महाशय से एक बार पूछा कि 'भक्ति कैसे हो ?' इस पर श्रीबाबाजी महाराज ने उत्तर दिया कि 'भक्ति तो दो पैसे में लाभ होती है' यह सुनकर शिशिरबाबू ने कहा कि—यह क्या बात ? आप तो मुझ से हँसी करते हैं। बाबाजी ने कहा 'हरेकृष्ण !' मैं उपहास नही करता, ठीक ही कहा है—दो पैसा देकर वटतल्ला की छपी श्रीनरोत्तम ठाकुर की प्रार्थना मोल लेकर पढ़ो, जिससे भक्ति लाभ होगी।'

इस प्रकाशन में मूल (बँगला) पाठ के साथ दो सज्जनों द्वारा उसका हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत किया जा रहा है, जिससे पाठकवृन्द मूल का रसास्वादन करते हुए हिन्दी रूपान्तरों द्वारा भली प्रकार वस्तु लाभ

कर सकें—एक रूपान्तरकार नित्यधाम प्राप्त आचार्य्य श्रीबालकृष्णजी गोस्वामी, श्रीराधारमण मन्दिर वृन्दावन के हैं। दूसरे लेखक श्री डा० पूर्णचन्द्र शर्मा आगरा निवासी को हम प्राय: १० वर्ष से जानते हैं। प्रारम्भ में हमने बाबाजी महाराज (श्रीपूज्यपाद श्रीश्रीरामदासजी महाराज ममाराध्य गुरुदेव महाशय) द्वारा प्रकाशित बँगला साधक-कंठ-माला की एक प्रति देकर उसे ध्यान से पाठ करने को कहा था तथा हो सके तो उसमें श्रीठाकुर महाशय की 'प्रार्थना' का हिन्दी रूपान्तर करने पर जोर दिया था—श्रीगुरुदेव को यह पुस्तक बहुत ही प्रिय थी, घर छोड़ने पर यही एक मात्र पोथी उनके साथ थी। श्रीडाक्टर साहिब इस साधक-कण्ठ-माला में से बहुत कुछ हिन्दी रूपान्तर तथा उल्था करने में सफल हुए हैं। यह दूसरा रूपान्तर उन्हीं की मूल-हस्त-लिपि से दिया जा रहा है, इसमें विशेषता यह है कि प्रत्येक पद श्रीठाकुर महाशय के भाव को उन्हीं के छन्द व शब्दों में हिन्दी में देते हुए, उसी प्रकार गान तथा पाठ किया जा सकता है। वर्त्तमान में लेखक, वेष लेकर झाड़मण्डल वृन्दावन में श्रीप्रियाशरणदास नाम से निवास कर रहे हैं। इनके वेष-गुरु श्रीश्रीराधारमणदासजी शास्त्री पंचतीर्थ महाशय के प्रोत्साहन से यह रूपान्तर हम प्रकाशित कर रहे हैं।

परिशेष में हम कालीदह निवासी बाबा श्रीकिशोरीदासजी महाराज के अनुगत शिष्य लाला प्रेमनाथजी के सुपुत्र श्रीमान् शिवनाथजी 'भगतनिवास' मौहल्ला बागवेगमसमरु, चाँदनी चौक (देहली)' को धन्यवाद देते हैं कि आपने इस पुनीत कार्य्य में अर्थ सहायता देकर महाप्रभु की बड़ी भारी सेवा की। शुभं भूयात्।

श्रीकृष्णदास बाबाजी,
कुसुम सरोवर वाले,
(मथुरा)

राम-जन्मोत्सव
चैत्र शुक्ल ६ सं० २०१४ वि०

कर सकें—एक रूपान्तरकार नित्यधाम प्राप्त आचार्य्य श्रीबालकृष्णजी गोस्वामी, श्रीराधारमण मन्दिर वृन्दावन के हैं। दूसरे लेखक श्री डा० पूर्णचन्द्र शर्मा आगरा निवासी को हम प्रायः १० वर्ष से जानते हैं। प्रारम्भ में हमने बाबाजी महाराज (श्रीपूज्यपाद श्रीश्रीरामदासजी महाराज ममाराध्य गुरुदेव महाशय) द्वारा प्रकाशित बँगला साधक-कंठ-माला की एक प्रति देकर उसे ध्यान से पाठ करने को कहा था तथा हो सके तो उसमें श्रीठाकुर महाशय की 'प्रार्थना' का हिन्दी रूपान्तर करने पर जोर दिया था—श्रीगुरुदेव को यह पुस्तक बहुत ही प्रिय थी, घर छोड़ने पर यही एक मात्र पोथी उनके साथ थी। श्रीडाक्टर साहिब इस साधक-कण्ठ-माला में से बहुत कुछ हिन्दी रूपान्तर तथा उल्था करने में सफल हुए हैं। यह दूसरा रूपान्तर उन्हीं की मूल-हस्त-लिपि से दिया जा रहा है, इसमें विशेषता यह है कि प्रत्येक पद श्रीठाकुर महाशय के भाव को उन्हीं के छन्द व शब्दों में हिन्दी में देते हुए, उसी प्रकार गान तथा पाठ किया जा सकता है। वर्त्तमान में लेखक, वेष लेकर झाड़मण्डल वृन्दावन में श्रीप्रियाशरणदास नाम से निवास कर रहे हैं। इनके वेष-गुरु श्रीश्रीराधारमणदासजी शास्त्री पंचतीर्थ महाशय के प्रोत्साहन से यह रूपान्तर हम प्रकाशित कर रहे हैं।

परिशेष में हम कालीदह निवासी बाबा श्रीकिशोरीदासजी महाराज के अनुगत शिष्य लाला प्रेमनाथजी के सुपुत्र श्रीमान् शिवनाथजी 'भगतनिवास' मौहल्ला बागवेगमसमरु, चाँदनी चौक (देहली)' को धन्यवाद देते हैं कि आपने इस पुनीत कार्य्य में अर्थ सहायता देकर महाप्रभु की बड़ी भारी सेवा की। शुभं भूयात्।

श्रीकृष्णदास बाबाजी,
कुसुम सरोवर वाले,
(मथुरा)

राम-जन्मोत्सव
चैत्र शुक्ल ९ सं० २०१४ वि०

❀ श्रीश्रीगौराङ्गविधुर्जयति ❀

अन्तिम आज्ञा !

★

विधूय-ज्ञान-विज्ञानं दयां कुरु दयानिधे !
सहामि नो तस्य भारं न पश्यामि निजं हितम् ॥१॥

श्रीगौरांग दयासिन्धो दीनबन्धो गुणाकर !
शेषाभिलाषामेकां मे पूरयस्व निजादर्या ॥२॥

कीर्तने मण्डले स्वीये स्थित्वा निजगणैः सह ।
भावमग्नां प्रेमसिक्तां दर्शयन्कनकच्छटाम् ॥३॥

सुशिक्षयन्भक्तियोगं देहि प्रेमधनं परम् ।
अन्याभिलाषा नो काचित् विद्यते हि ममाशये ॥४॥

दासाधमः—

श्रीगोवर्द्धनपूजनोत्सव,
संवत् १९९७
(श्रीधाम वृन्दावन)

यह कृति आचार्य्य श्री बालकृष्ण गोस्वामी महाराजजी की है। उनके सुपुत्र, चित्रकलाकोविद श्री जगदीश गोस्वामी जी महाराज से प्राप्त।

❀ श्रीराधारमणो जयति ❀

श्रील नरोत्तमदास ठाकुर महाशय की प्रार्थना

(१)

[संप्रार्थनात्मिका]

गौराङ्ग कहत होय पुलक शरीर ।
हरि हरि कहत नयन बहे नीर ॥
नित्यानन्द चन्द कब करुणा करोगे ?
संसार वासना मेरी कबलों हरोगे ?
विषय छाँड़ कब शुद्ध होयगो मन ?
कब मैं हेरूँगो वह धाम वृन्दावन ?
रूप, रघुनाथ कह हौंऊंगो व्याकुल ।
कब मैं जु जानूंगो वह प्रीति युगल ?
रूप, रघुनाथ के पद में रहै आश ।
प्रार्थना करत सदा नरोत्तमदास ॥
यही आश कर मन होय के सतृष्ण ।
करत अनु प्रार्थना दीन बालकृष्ण ॥

(२)

[दैन्य बोधिका]

हरि ! हरि ! कैसो करम मम मंद ?
ब्रजे राधाकृष्ण पद, नहिं सेवे छिन आध ।
नहिं जानों प्रेम को सम्बन्ध ॥

स्वरूप, सनातन, रूप, रघुनाथ, भट्ट युग,
भूगर्भ, श्रीजीव, लोकनाथ ।
इन हूं के पद्मपाद, नहिं सेवे छिन आध;
कैसे मेरी साध पुरै नाथ ?
कृष्णदास कविराज, रसीक भक्तन साज;
रच्यो जिन चैतन्य चरित ।
गौर-गोविन्द लीला, सुनत गलत शिला;
नहि लगो तामें मेरो चित्त ॥
सो सब भक्तन संग, जिन कियो है सुसंग ।
तिन संग क्यों न भयो वास ?
कहा कहूँ दुःख कथा जनम गँमायो वृथा ।
धिक्-धिक् नरोत्तमदास !

(३)

[संप्रार्थनात्मिका]

राधा कृष्ण ! यह जन करै निवेदन ।
दोउ अति रसमय सकरुण हृदय;
नाथ ! करो सावधान मन ॥
हे, कृष्ण गोकुलचन्द ! हे, गोपी प्राण बल्लभ !
हे, हे, कृष्ण प्रेयसी शीरोमणि ?
हेम गोरी-श्याम गात, होत जाके कर्णपात;
गुन सुन जीयैं सब प्राणी ॥
अधम दुर्जन प्रति, है तव करुणा अति;
विदित ये यश जग माहीं ।
साधु मुख सुन सब, शरन लई है तब;
उपेखो तो मेरी गति नाहिं ॥

जय राधे ! जय कृष्ण ! जय जय राधे-कृष्ण !
कृष्ण ! कृष्ण ! जय जय राधा !
अंजलि [मस्तक धर, नरोत्तम भूमि गिर;
कहै दोऊ पूरो मन साधा ॥

(४)

[स्वाभीष्ट लालसा]

हरि ! वो दिन कब आबेगो मेरो ?
दोऊ अङ्ग परसुंगो दोऊ अङ्ग निरखूंगो,
मैं होऊंगो व्हैकै युग चेरो ॥
ललिता विशाखा संग, सेवन करूंगो रंग;
माल गल दऊं पोय फूल ।
कनक संपुट भर, कपूर सुपारी धर;
मुख कमल दऊं ताम्बूल ॥
राधा कृष्ण वृन्दावन, ये हैं मेरे प्रानधन;
यही मम जीवन उपाय ।
जय पतित पावन, देह मोय यही धन;
तुम बिन और न सुहाय ॥
श्री गुरु करुणासिन्धु, अधम जन के बन्धु;
लोकनाथ लोक के जीवन ।
हा हा ! प्रभु ! करो दया, देहु मोय पद छाया;
नरोत्तम लई है शरन ॥

(५)

[दैन्य बोधिका]

हरि हे ! विफलहि जनम गमायो ।
पाय कै मानुष तन, राधा कृष्ण भजे बिन;
मैं जान सुन कै विष खायो ॥

गोलोक को प्रेमधन, हरिनाम संकीर्त्तन;
मम मति नहिं कियो ताय।
संसार विषयानले, दिन रैन हृदय जले;
सुशान्ति को कियो न उपाय॥
ब्रजेन्द्रनन्दन जोई, शची सुत भये सोई;
बलराम भये जु निताइ।
दीन हीन जे ते सारे, हरिनाम दै कै तारे;
ताकी साक्षी जगाइ मधाइ॥
हा हा! प्रभु नन्द सुत, वृषभानु सुता जुत;
करुणा करो जु एक बार।
कहै नरोत्तमदास छुड़ावो न पद आश;
तुम बिन को करै निस्तार?

(६)

साधक देहो चित लालसा।
हरि! हरि! कब मेरो होयगो सुदिन?
भजूँगो मैं राधा कृष्ण होय प्रेमाधीन॥
हिय की बीन में बजाय मधुर तान।
आनंद से करूँगो युगल रूप गान॥
राधिका गोविन्द कह करूंगो रोदन।
भीजै सब अङ्ग, जब बहैंगे नयन॥
अब तो करुणा करो रूप, सनातन!
रघुनाथदास मम श्री जीव जीवन॥
अब की तो कृपा करो ललिता, विशाखा!
सख्य भाव के प्रभु सुबलादि सखा॥
सब मिल दया करो पूरो मेरी आश।
प्रार्थना करत सदा नरोत्तमदास॥

(७)

[दैन्य बोधिका]

प्राणेश्वर ! यह जन करै निवेदन ।
गोविन्द गोकुलचन्द ! परम आनंदकंद !
गोपी प्रिय ! करो विलोकन ॥
पद सेवा निरन्तर, करूँ देहु यही वर;
तुम प्रभु ! करुणा निधान ।
परम मंगल यश, सुनत भिलत रस;
होत सब कारज विधान ॥
कठिन संसार गति, विषय में पड़ी मति;
भूलो तुम्हें यही शूल हीये ।
जर जर तन मन, अचेतन छीन छीन,
जीतै ही मरण दुःख दीयो ॥
मैं अति अधम जन, करो कृपा निरीक्षण;
दास कर राखो वृन्दावन ।
श्रीकृष्ण चैतन्य नाम, प्रभु मम गौर धाम;
नरोत्तम लइ जु शरन ॥

(८)

[दैन्य बोधिका]

श्री गोविन्द ! गोपीनाथ !
कृपा कर राखो पद पास ।
कामादि रिपु महान्, लिये फिरैं नाना स्थान;
विषय भुगाय करैं नाश ॥
बन कै माया को दास, करूँ नाना अभिलाष;
तव स्मरन दूर कर ।

अर्थ लाभ के उद्देश, कपट वैष्णव वेश;
धर कै डोलत घर-घर ॥
अति दुःखी भयो जभी, ब्रज पुर लियो तभी;
कृपा डोर गल माहिं डार।
दैवी माया बलात्कार, गल डोर लई निकार;
भव कूप डारो फिर मार॥
यदि फिर कृपा कर, मेरे केश कू पकर;
खैंच कै कराओ ब्रज वास।
तब तो देखोगे भलो, नहीं तो ये प्राण चलो;
कहै दीन नरोत्तमदास ॥

(६)

[दैन्य बोधिका]

पतित पावन प्रभु मदन गोपाल !
श्री गोविन्द ! गोपीनाथ ! तुम अनाथ के नाथ,
अधम पै प्रभु कृपा कीजै ।
संसार सागरापार, पड़ो आय मझ धार;
कृपा डोर बाँध खैंच लीजै ॥
मैं हूँ अति नीचाधम, दया के ठाकुर तुम;
सुनी ये वैष्णव के मुख सों।
ये बड़ो भरोसो मन, डारो लै कै वृन्दावन;
देखूं मैं वंशीबट सुख सों ॥
कृपया हो अग्रसर, खैंचो केश कू पकर;
श्री यमुना देहु पद छाया।
बहुत दिन की आश, मोय करो न निराश;
दया कर जिन करो माया ॥
अनित्व शरीर धर, माया मोह वृथा कर;

मृत्यु भय लग रह्यो मोय।
नरोत्तमदास कहै, निश दिन रोय बहैं;
कहीं व्रज वियोग ना होय ॥

(१०)

[स्वनिष्ठा]

धन मेरे नित्यानन्द, पति मेरे गौरचन्द्र;
प्राण मम जुगल किशोर ।
अद्वैत आचार्य बल, गदाधर जात कुल;
नरहरि हिय की हिलोर ॥
वैष्णव की पद धूलि, सोइ मम स्नान केलि;
तर्पण वैष्णव यश गान ।
कर कै विचार मन, भक्ति रस आस्वादन;
भागवत मध्यस्थ महान ॥
वैष्णब को उच्छिष्ट, तामें मेरो मन निष्ट;
वैष्णव के नाम में उल्लास।
वृन्दावन चबूतरा, तामें मेरो मन घिरा;
कहे दीन नरोत्तमदास ॥

(११)

[मनः शिक्षा]

निताइ पद कमल, कोटि चन्द सुशितल;
जासु छाया जीवन उपाय ।
निताइ के बिना कहीं, राधा कृष्ण मिलैं नहीं;
दृढ़ कर गहो तिनै धाय ॥
तिनसों न नातो जाको, वृथा जन्म गयो ताको;
सो है बड़ो पशु दुराचारी।
निताइ न जाके मुख, भागे जग सुख दुःख;

दया करो सीतापति-अद्वैत गुसांई !
तुमारी कृपा सों मिलैं चैतन्य निताई ॥
हा, स्वरूप ! सनातन ! रूप रघुनाथ !
हा, भट्ट युग ! श्रीजीव ! प्रभु लोकनाथ ॥
दया करो श्री आचार्य प्रभु श्रीनिवास !
रामचन्द्र संग मागै नरोत्तमदास ॥

(१५)

[सपार्षद भगवद्विरह जनित विलाप]

प्रेमधन लाये कर करुणा प्रचुर ।
ऐसे प्रभु कहाँ गये आचार्य ठाकुर ?
कहाँ जो स्वरूप रूप कहाँ सनातन ?
कहाँ दास रघुनाथ पतित पावन ?
कहाँ मम भट्ट युग कहाँ कविराज ?
सब संग कहाँ गये गौर नटराज ?
पाषाण से फोडुं माथो अनल में जलूं ।
गौर गुण निधि सों मैं कहाँ जाय मिलूं ?
उन सब संग जिन कियो है विलास ।
बिना तिन संग रोयै नरोत्तमदास ॥

(१६)

[पुनश्च सदैन्य विलाप]

हरि ! हरि ! मेरे हिये बड़ो शूल भयो ।
पाय के दुर्लभ तन, श्री कृष्ण भजन बिन;
जनम विफल मेरो गयो ॥
श्री ब्रजेन्द्र के कुमार, नदीया ले अवतार;
जगत में सबे भक्ति दीनी ।

मैं नीच पामर मति, तापे भी कठोर अति;
तासों मोपे करुणा न कीनी ॥
स्वरूप, सनातन, रूप, रघुनाथ भट्ट युग;
तिनमें न भई मेरी मति ।
दिव्य चिन्तामणि धाम, वृन्दावन जाको नाम;
तामें मेरी भई नहिं स्थिति ॥
विषय में मति अति, न करी वैष्णव रति;
निरंतर खेद होत मन ।
कहै नरोत्तम यही, जीने को उचित नहीं;
श्रीगुरु वैष्णव सेवा बिन ॥

(१७)

[वैष्णव महिमा]

वैष्णव ठाकुर पद, अवनी की है संपद;
सुनो भाइ ! होय एक मन ।
जो ताकी शरण जाय, कृष्ण भक्ति मिले ताय;
और सब मरैं अकारन ॥
वैष्णव चरण जल, देत प्रेम भक्ति केवल;
अन्य नहीं ऐसो बलवन्त ।
वैष्णव चरण रज, मस्त के भूषण सज;
यहीं सब भूषण को अंत ॥
तीर्थ को पवित्र गुन, पुरान में परै सुन;
तासो भक्ति रहै अपूरन ।
वैष्णव के पादोदक, सम नहीं तीर्थ तक;
जासों होय वांछित पूरन ॥
वैष्णव संग सों मन, आनंदित अनुक्षन;
सदा होत श्री कृष्ण प्रसंग ।

रोवै नरोत्तम दीन, हीयो भयो धैर्य हीन;
मेरी दशा क्यों जो भइ भंग ॥

(१८)

[वैष्णव विज्ञप्ति]

ठाकुर वैष्णव गण ! करूं यह निवेदन;
मैं बड़ो अधम दुराचार ।
दारुण संसार निधि, तामें डोबो मोय विधि;
पकर के केश करो पार ॥
विधि बड़ो बलवान, नहिं सुनैं धर्म ज्ञान,
फांसे सदा करम की फाँस ।
नहीं कहीं सुख लेश, जहाँ देखूं तहाँ क्लेश;
दीन सम होऊँ पाय त्रास ॥
काम क्रोध मोह लोभ मद अभिमान क्षोभ;
खैंचैं सभी निज निज स्थान ।
मेरो ऐसो है ये मन, जैसे फिरै अंध जन;
सुपथ-कुपथ नहीं ज्ञान ॥
नहीं लीयो सत मत, असत में रह्यो चित;
नहीं करी तव पद आश ।
नरोत्तमदास कहै, देख सुन भय लहै;
उद्धार के राखो निज पास ॥

(१९)

अब की तो कृपा करो वैष्णव गुसांईं !
तुम बिन पतित पावन कोउ नहिं ॥
कोन के समीप गये पाप छूट जांय ?
तुम सो दयालु प्रभु कहीं कोउ नांय ॥

गंगा कू स्पर्श करे तब होय पावन।
तुमारो दर्शन ही है पाप विनाशन॥
हरि अपराधी कू तो तारे हरिनाम।
तव अपराधी कू है कहीं नहीं ठाम॥
तुमारे हिय में करैं गोविन्द विश्राम।
गोविन्द! कहत मम वैष्णव हैं प्रान॥
प्रति जन्म आश करूं पाऊँ पद धूल।
दया करो नरोत्तमें जान अनुकूल॥

(२०)

कैसे मिले मोय सेवा मैं हूँ दुराचार।
गुरु वैष्णव रति भइ न एक बार॥
अशेष माया में सदा लगी रहै मति।
वैष्णव में लेश मात्र जन्मी नहीं रति॥
गल में मेरे डारी फाँसी माया पिशाची!
अन्धी भइ बुद्धि मेरी विषय में रांची॥
यह जय करके छुड़ाई नहीं जाय।
साधु कृपा बिना और नहीं है उपाय॥
अदोषदर्शी हो प्रभु पतित उद्धार!
या बार नरोत्तम कू करो जो निस्तार॥

(२१)

[दैन्य बोधिका]

हरि! हरि! कैसे मेरे करम अभागे?
विफल जमन गयो, हिये बिच शेल लयो;
नहिं मैंने हरि अनुरागे॥
यज्ञ दान तीर्थ स्नान, पुण्य कर्म जप ध्यान;
गये ये मोह में अकारन।

अब यह मन जानों, उपहास भयो मानों;
वस्त्र हीन अलंकार तन ॥
साधु मुख कथामृत, सुन कै विमल चित;
नहीं भयो पाप के कारन।
सतत असत संग, भयो मम सब भंग;
आय गयो मेरो जो मरन ॥
श्रुति स्मृति को जो रव, तामें सुना यह सब;
हरि पद अभय शरन ।
जन्म बितायो सुख सों, कृष्ण न कह्यो मुख सों;
नहीं कियो सो रूप चिन्तन ॥
राधा कृष्ण युग पाद, निश दिन रहै याद;
दूर होंय सकल वासना।
कहै नरोत्तमदास, भय सब भयो नाश।
तन-मन सोंपो है अपना ॥

(२२)

[साधक देहोचित श्री वृन्दावन लालसा]

हरि ! हरि ! कब ऐसी दशा फिर पाऊंगो ?
कर कै संसार भग्न, होय कै आनंद मग्न;
फिर कब ब्रज में जाऊँगो ?
सुखमय वृन्दावन, कब होय दरशन ?
ताकी रज कब लगै गात ?
प्रेम गद गद व्है कै, राधा कृष्ण नाम लै कै;
रोवत फिरूंगो घबरात ॥
निभृत निकुंज जाय, कर कै प्रणाम पाय;
पुकारूंगो हा राधिका वर !

कब जमुना के तीर, परस करूँगो नीर ?
पीऊँगो अञ्जली भर भर ॥
कब ऐसो भाग पाय, श्री रास मंडल जाय;
लोटूँगो मैं बाकी रज माहीं ।
बंशीवट छाया पाय, आनंद हिये में लाय;
पड़ो जो रहूँगो बाकी छाहीं ॥
कब गिरि गोवर्धन, करूँगो मैं दर्शन;
कब करूँ राधाकुंड वास ?
कब ब्रज विचरत, होयगो ये तन हत ?
कहै दीन नरोत्तमदास ॥

(२३)

हरि हरि ! अब कब पलटैगी दशा ?
इन सब कर वाम, जाऊँ वृन्दावन धाम;
यही मेरे मन अब बसा ॥
धन जन पुत्र घर, सबन कूँ दूर कर
होयकैं शरण कब जाऊँ ?
सब दुःख परिहर, वृन्दावन वास कर;
माधुकरी भिक्षा माँग खाऊँ ॥
यमुना को जल मानो, अमृत समान जानो;
पान करूँ भरकैं उदर ।
कब राधाकुंड जाय, स्नान करूँ तामें धाय;
रहूँ श्यामकुंड के ऊपर ॥
ब्रज के द्वादश वन, लीला स्थल को भ्रमन;
लोटूँ होय प्रेम में मगन ।
पूछूँगो प्रति जन सों, ब्रज निवासी गन सों;
पाँय पड़ूं करूँ निवेदन ॥

भोजन थाली को वन, होयगो कब दर्शन;
और हैं जितेक उपवन ।
तिन में भी वृन्दावन, नरोत्तमदास मन;
आश करै युगल चरन ॥

(२४)

करुँओ कोपीन लैकैं, फटो कंथा गल दै कैं;
त्याग करूँगो सब विषय ।
कृष्ण प्रेम अनुभव, व्रज की कुँजन कब;
जाय कैं करूँगो निजालय ?
हरि ! हरि ! कब मेरो होयगो सु दिन ?
फिरूँगो मैं होय उदासीन ॥
शीतल यमुना जल, तामें स्नान कुतुहल;
करूँ प्रेम-आनन्दित होय ।
बाहू पै बाहू कूँ धर, वृन्दावन घर-घर;
कृष्ण ! कह फिरूँ रोय रोय ॥
देख कैं संकेत स्थान, शांत करूँ तप्त प्रान;
लोट्ट भूम होय प्रेमावेश ।
कहाँ राधा प्राण प्यारी ? कहाँ गिरोवर धारी ?
पुकारूँगो कहाँ हो ब्रजेश ?
माधवी कुँज की डारी, बैठ दोउ शुक-सारी;
गामेंगे श्री राधाकृष्ण रस ।
बैठ कैं मैं तरु तल, सुनूँ होय सुशीतल;
सुख सों बिताऊँगो दिवस ॥
श्री गोविंद गोपीनाथ श्रीमति राधिका साथ;
बैठ देखुं रत्न सिंहासन ।

दीन नरोत्तमदास, करत दुर्लभ आश;
ऐसो मेरो होय कोन दिन ?

(२५)

हरि ! कब मैं होऊँगो वृन्दावन वासी ?
निरखैंगे नयन युगल रूपराशी ॥
तजकैं शयन सुख विचित्र पलङ्ग ।
कब ब्रज धूलि में धूसर ह्वै है अङ्ग ?
षट रस भोजन कूँ कर परिहार ।
कब माँग माधुकरी करूँगो अहार ?
परिक्रमा करत फिरूँगो वन-वन ।
विश्राम करूँगो जाय यमुना पुलिन ॥
ताप दूर करूँगो मैं जाय बंशीवट ।
बैठूँगो कब ब्रज में भक्तन निकट ?
नरोत्तमदास कहै सब करूँ त्याग ।
कब जु होयगो मेरो ऐसो महा भाग ?

(२६)

कब ऐसो होयगो सुदिन ?
सबै छाँड़ जाऊँ वृन्दावन ॥
और कब श्री रासमण्डल ?
लोटूँ जाय कर कुतूहल ॥
और कब गिरी गोवर्द्धन ?
निरखूँगो भर के नयन ॥
श्यामकुंड राधाकुंड स्नान ।
करकै करूँ शीतल प्रान ॥
और कब यमुना कौ जल ?
पान कर होऊँगो निर्मल ॥

साधु संग वृन्दावन वास ।
नरोत्तमदास करै आश ॥

(२७)

जीअत मरत मैं सेउंगो राधाकृष्ण ।
तासु लीला स्थान देखूं होयकै सतृष्ण ॥
जहाँ जो जो लीला करैं युगल किशोर ।
सखिन के संग लख होऊं मैं विभोर ॥
श्री रूप मंजरी देवी ! मोपै करो दया ।
प्रति क्षण देहु मोय पाद पद्म छाया ॥
श्री रस मंजरी देवी ! करो अवधान ।
अनुक्षण करूं तव पाद पद्म ध्यान ॥
वृन्दावन नित्य नव युगल विलास ।
प्रार्थना करत सदा नरोत्तमदास ॥

(२८)

राधा कृष्ण प्राण मम युगल किशोर ।
जीवत मरत मेरी गति नहीं और ॥
कालिंदी के कूल पै कदंब को जो वन ।
तामें रत्न वेदी पै बैठाऊं दोऊ जन ॥
श्याम गौर तन लेपूं चन्दन सुगन्ध ।
चमर ढुलाय देखुं शुभ मुख चन्द ॥
माला पोय गल दऊं मालती के फूल ।
वदन भर कैं दऊं रुचिर ताम्बूल ॥
ललिता विशाखा आदि जेती सखी वृन्द ।
तिनकी आज्ञा सो सेऊं चरणारविन्द ॥
श्री कृष्ण चैतन्य प्रभु को दासानुदास ।
नरोत्तमदास करै सेवा अभिलाष ॥

(२६)

[स्वाभीष्ट लालसा]

हरि हरि कब मेरो होयगो सुदिन ?
केलि रंग कर तिनैं सेऊं प्रति छिन ॥
ललिता विशाखा साथ, पकर सखिन हाथ;
मंडली बनाऊं कर मेल ।
राधा कृष्ण परस्पर, नृत्य करै मिलकर;
समय बिताऊं लख खेल ॥
अलस विश्राम घर, गोवर्द्धन गिरिवर;
दोउ मल करैंगे शयन ।
कहै नरोत्तमदास, यही मेरी मन आश;
करूं नित चरन सेवन ॥

(३०)

गिरवर गोवर्द्धन, स्थल जो अति निर्जन;
राधा कृष्ण कराऊं शयन ।
ललिता विशाखा संग, सेवन करूंगो रंग;
सुखमय अरुन चरन ॥
कनक संपुट भर, तांबूल कर्पूर धर;
दऊंगो मैं वदन कमल ।
किंकिणी सुमणीमय, नूपुर रतनमय;
धराऊंगो चरण युगल ॥
कनक कटोरा पूर, मलयज सकर्पूर;
श्री अङ्ग में करूंगो लेपन ।
गुरू रूपा सखी वाम, त्रिभंग शोभा सुठाम;
करूँगो मैं चमर व्यजन ॥

दोऊ के कमल नैन, निरख पाऊँगो चैन;
करूँ स्पर्श युगल चरन ।
चैतन्य दासानुदास, चित्त रही अभिलाष;
नरोत्तम फुरै यही मन ॥

(३१)

हरि ! हरि ! मेरी ऐसी दशा कब होय ?
श्री वृषभानु नगर, अहीरी गोप के घर,
पुत्री होय जन्म मिलै मोय ॥
जावट ग्राम में मेरे, कब जो परैंगे फेरे,
वास कब करूँ तहाँ जाय ?
ललिता उत्तम अति, तासु प्रीत जाके प्रति,
सेऊं सो रूप मंजरी पाय ॥
वे भी कृपावती होय, अरुण चरण मोय,
कृपा कर करैं समर्पन ।
सफल होयगी दशा, पुरैगी मन की आशा,
सेऊं युग युगल चरन ॥
वृन्दावन के द्वै चन्द, चहुँ ओर सखी वृन्द,
अन्त समें करूँगो सेवन ।
चारो दिस सखीवर, वाद्य यंत्र लिये कर,
निरखूँगो व्है के सुखी मन ॥
देख दोऊ चन्द मुख, नैनन कू मिले सुख,
बहै नित प्रेम अश्रुधार ।
वृन्दा को आदेश पाऊँ, दोउन समीप जाऊँ,
कब ऐसो आवै शुभ वार ?
श्री रूप मंजरी सखि, मोय अनाथिनी लखि,
राखि है अरुण युग पाय ।

कहै नरोत्तमदास, प्रिय नर्म सखी पास,
दासी कब बनूंगो मैं जाय ?

(३२)

हरि हरि ! यह दशा कैसे तो मैं पाऊँ ?
छांड़ के पुरुष तन, रहूँ मैं प्रकृति बन,
दोऊ अङ्ग चन्दन लगाऊँ ॥
सुभग बाँध के केश, रुचिर बनाऊँ वेश,
गले दऊँ फूलन को हार ।
पीत वसन सुअङ्ग, धराऊँ सखिन संग,
दऊँ मुख पान बार बार ॥
दोउ रूप मनोहर, निरखूँगो नैन भर,
नीलांबर प्यारी कू उढ़ाय ।
गुंथ नव रत्न श्रेणी, बांधूगो विचित्र वेणी,
फूलन सों शोभा कू बढ़ाय ॥
युगल चन्द माधुरी, पीयैं जु नैन चकोरी,
यही मेरे मन अभिलाष ।
जय रूप सनातन, देहु मोय यही धन,
निवेदन करे नरोत्तमदास ॥

(३३)

[सिद्ध देह द्वारा श्री वृन्दावनेश्वरी से साक्षात्प्रार्थना]
प्राणेश्वरी ! अब तो करुणा करो मोपै ।
दाँत सों तृण पकर, अञ्जली मस्तक धर,
करत मैं निवेदन तोपै ॥
प्रिय सहचरी संग, सेवन करूँगो रंग,
अङ्ग वेश सजाऊँ सिहाय ।

राखो निज सेवा दैकै, चरन में मोय लैकै;
मिलूँ सहचरिन में आय ॥
सुगंधित सुचन्दन, मणिमय आभरन;
पट्ट वस्त्र धराऊँ सुरंग ।
यह सब सेवा जासु, दासी जाय होउँ तासु;
निरन्तर रहूँ ताके संग ॥
जल सुवासित कर, रतन झारी में भर;
कपूर वासित मृदु पान ।
ये सब सजाय थाल, लवंग मालती माल;
भक्ष द्रव्य विविध विधान ॥
सखी को इंगित पाय, ये कब तुरत लाय;
दऊँगो मैं ललिता कूँ धाय ।
कहै नरोत्तमदास, मेरे मन यही आश;
खड़ो रहूँ सखी पीछे जाय ॥

(३४)

लैकै कमल अरुन, सेज बिछाऊँगो चुन;
बैठाऊँगो किशोर किशोरी ।
अलक आवृत मुख, निरख पाऊँगो सुख;
नीलमणि श्याम हेम गोरी ॥
प्राणेश्वरी ! कब ह्वै है कृपावलोकन ?
पायके आदेश तव, फूल लाऊँ चुन कब;
सुनूँगो कब मीठे बोलन ?
मृगमद सुतिलक, दऊँ लगाय मस्तक;
लेपूँ तन चन्दन सुगन्ध ।
गल दै मालती माल, लखूँ राधा नन्दलाल;
उड़ाऊँगो मधुकर वृन्द ॥

ललिता जू मोय जब, बीजना सु दैंगी तब;
विजन करूँगो मृदु मंद ।
युग तन श्रम जल, पोंछ कै जु मैं सकल;
पाऊँगो जु परम आनन्द ॥
करै नरोत्तमदास, श्री पाद पंकज आश;
पीयो चाहूँ सुमधु सेवन ।
कब होय ऐसो दिन, और सब देखे बिन,
देख जीऊँ युगल नयन ॥

(३५)

[स्वाभीष्ट लालसा]

कुसुमित वृन्दावन, जहाँ नाचे शिखिगन;
बोलै पिक गूँजै अलि पुँज ।
प्रिय सहचरी संग, जाऊँ गाय कर रंग;
मनोहर कूटीर निकुँज ॥
हरि ! कब होयगो सफल मनोरथ ?
दोऊ की मंथर गति, कौतुक सों देख अति;
पुलकित होय मनमथ ॥
सखिन के बीच जाय, राधिका की सैन पाय;
लै कै कंघी कर में सुघर ।
कुटिल कुंतल सब, सुधार बहाऊँ कब;
गूँथूंगो मैं वेणी मनोहर ॥
मृगमद सचन्दन, करूँ अंग सुलेपन;
माल गल दऊँगो सुन्दर ।
चन्दन कुमकुम लैकै, तिलक सुभाल दैकै;
निरखूँगो मुख सुधाकर ॥

नीलवर्ण पट्टाम्बर, धराऊँ जतन कर;
पायन में रतन नूपुर ।
रत्न झारी जल भर, धोऊँगो चरन कर;
पोंछूँगो लै अपने चिकुर ॥
कुसुम कमल दल, रचूँ सैज सुकोमल;
दोऊन कू कराय शयन ।
धवल चमर लाय, मृदु मृदु करूँ ताय;
श्रम होय जब दोऊ तन ॥
कनक सम्पुट भर, तांबूल कपूर धर;
दऊँगो में दोऊ के वदन ।
युगल अधरामृत, तांबूल जु सुवासित;
माँगूगो मैं करके जतन ॥
श्रीगुरु करुणा सिन्धु, लोकनाथ दीनबन्धु;
मो दीन कूँ करो अवधान ।
राधा कृष्ण वृन्दावन, संग नर्म सखी गन;
नरोत्तम मांगे यही दान ॥

(३६)

हरि हरि ! ऐसो कब होयगो सुदिन ?
गोवर्द्धन गिरिवर, परम निभृत घर;
राधाकृष्ण कराऊँ शयन ॥
झारी भर जल लाय, चरणन कू छुवाय;
केशन सों पोंछूँगो मैं तिनैं ।
कनक संपुट भर, तांबूल कर्पूर धर;
होय सुखी खवाऊँगो बिनैं ॥
प्रिय सखीगण संग, सेवन करूँगो रंग;
पद सेवा करूँ निज कर ।

युगल कमल नैन, लखकै पाऊँगो चैन,
दोउ तम पुलक अन्तर ॥
मल्लिका मालती माल, बनायकै सुविशाल,
कब गल दऊँ पहराय ?
कनक कटोरा कर, कर्पूर चंदन भर,
पाऊँ सुख दोउन लगाय ॥
कब मिलै यह सुख, निरखूँ मैं दोउ मुख,
लीलारस निकुञ्ज शयन ।
श्रीकुंदलता के सङ्ग, सुकेलि कौतुक रङ्ग,
नरोत्तम करैंगो श्रवन ॥

(३७)

[श्रीकृष्ण से विज्ञप्ति]

प्रभु ! मोपै अबको तो करुणा करियै ।
देख युगल चरन, होंय सफल नयन ॥
विनती यह चित धरियै ॥
निज पद सेवा दीजै, मेरी न उपेक्षा कीजै,
दोउ प्रभु करुणासागर ।
दोउ बिन नहीं जानूँ, यही बड़ो भाग मानूँ,
मैं हूँ बड़ो पतित पामर ॥
ललिता की आज्ञा पाय, चरण सेऊँगो जाय,
प्रिय सखी सङ्ग भावै मन ।
तुम दाता शिरमौर, मासों नहीं दीन और,
दान दीजै चरन सेवन ॥
राधाकृष्ण पद पाय, मनको संताप जाय,
दूर होय विकलता सारी ।

कहै नरोत्तमदास, सिद्ध होय यही आश,
आयो हूँ शरन मैं तिहारी ॥

(३८)

हरि ! हरि !
विषय कुटिल मति, कुसङ्ग में रही रति,
तरवे को अब का उपाय ?
स्वरूप सनातन रूप, रघुनाथ भट्ट युग,
लोकनाथ सिद्धान्त सागर ।
सुनतो सो सब कथा, मिटती मन की बिथा,
तब शुद्ध हो तो जु अन्तर ॥
जब गौर नित्यानन्द, अद्वैतादि भक्त-वृन्द,
नदिया में लियो अवतार ।
जनम न भया तब, तन को का काम अब ?
वृथा भयो फिरूँ मैं भूभार ॥
हरिदास आदि फिरें, महोत्सव आदि करें,
नहीं देखो सो सुख विलास ।
कहा कहूँ दुःख कथा, जनम गमायो वृथा,
धिक धिक नरोत्तमदास ॥

(३९)

[लालसा]

श्री रूप मञ्जरी पद, सोइ मम सुसम्पद,
सोइ मम भजन पूजन ।
सोइ मम प्रानधन, सोइ मम आभूषन,
सोइ मम प्रान के जीवन ॥
सोइ मेरे रस - निधि, सोइ मेरा वांछा सिद्धि,
सोइ मम वैदिक धरम ।

सोइ ब्रज सोइ तप, सोइ मेरो मन्त्र जप;
सो नित्य नैमित्तिक करम ॥
अनुकूल होय विधि, सो पद में होय सिद्धि;
निरखैंगे ये दोउ नयन ।
सो रूप माधुरी राशी, प्रान कुवलय शशी;
प्रफुल्लित होय निश दिन ॥
तव अदर्शन अहि, गरल जारत महि;
चिर दिन तापित जीवन ।
हा हा ! प्रभु ! करो दया, देहु मोय पद छाया;
नरोत्तम लइ है शरन ॥

(४०)

साधुन सों सुनो यह कहैं सर्व जन ।
श्री रूप कृपा सों मिलें युगल चरन ॥
हा हा ! प्रभु सनातन गौर परिकर ।
सब मिल वांच्छा पूर्ण करो कृपा कर ॥
श्री रूप की कृपा कैसे होय मेरे प्रति ।
तासु पदाश्रय कर्त्ता महाशय अति ॥
कब लोकनाथ प्रभु सङ्ग मोय लैंगे ?
श्री रूप के चरन में कब सोंप दैंगे ?
ऐसो कब होय भाग नर्म सखी गन ।
नरोत्तम अनुगत कौ करैं शासन ॥
दीन हीन दासाधम तव बाल कृष्ण ।
करै अनु निवेदन होय कै सतृष्ण ॥

(४१)

नई दासी जान मोय श्री रूप हेरैंगे ।
ऐसे शुभ दिन मेरे कबलों फिरैंगे ?

मोसों आज्ञा करेंगे कि, दासी ! यहाँ आओ ।
सेवा की सामग्री तुम शीघ्र यहाँ लाओ ॥
तासु आज्ञा पाय कै मैं होय आनन्दित ।
तुरत ही कार्य करूँ कर एक चित ॥
सेवा की सामिग्री रत्न थाल में सजाय ।
सुवासित वारि पूर्ण स्वर्ण झारी लाय ॥
दोऊ के सन्मुख जाय धरूँगो मैं कब ?
नरोत्तमदास पूंछै यह दशा होय कब ?

(४२)

श्रीरूप के पीछे खड़ो रहूँ भीत होय ।
दोउ तब पूछैंगे ये मेरी ओर जोय ॥
सदय हृदय होय कहैं कर हाँसी ।
कहाँ मिली रूप ! तुमें यह नई दासी ॥
श्रीरूप मञ्जरी दैंगी तब ये बताय ।
मंजुलाली नें दई है यह दासी लाय ॥
अति ही कोमल चित्त जाको मैंनें लख ।
सेवा काज दै कै जाय यहाँ दइ रख ॥
या प्रकार दो उनके सामने बताय ।
नरोत्तमें कब राखैं सेवा में लै जाय ?

(४३)

प्रभु लोकनाथ ! राख चरन में लीजै ।
आनन्दित होय मोपै कृपा दृष्टि कीजै ॥
मनोवांच्छा सिद्ध होय, होऊँ पूर्ण तृप्ण ।
यहाँ श्री चैतन्य मिलैं, वहाँ राधाकृष्ण ॥
तुम बिन कौन दया करैगो अपार ?
मन की वासना पूरी करो एक बार ॥

तीनों ही जगत बीच मेरो कोउ नाहीं।
कृपा करी देहु वास पदतल माहीं ॥
राधा कृष्ण लीला गुण गाऊँ निशदिन।
नरोत्तम वांच्छा पूर्ण नहीं तुम बिन ॥

(४४)

लोकनाथ ! दया कर देहु यही वित्त।
राधा कृष्ण चरन में रहै सदा चित्त ॥
तुमारे सहित रहूँ सखीन के संग ।
उठैं यही निश दिन मन में तरंग ॥
सखीन में जो बड़ी हैं तासु पद जाय-
सेवा हित कब मोय सौंपौगी सिहाय ॥
तब ही होयगो मेरो वांछित पूरन ।
आनन्द सों सेऊँ दोउ युगल चरन ॥
श्री रूप मंजरी सखि ! करो कृपा दृष्टि।
नरोत्तमैं सींचो कर सेवामृत वृष्टि ॥

(४५)

हा हा ! प्रभु ! करो दया करुणा निधान।
मिथ्या माया ज्वाला अति जारै मम प्रान ॥
कोनसो सुदिन होय सखी संग पाऊँ।
ब्रज के कुसुम पोय दोउन पैराऊँ ॥
बैठ कै सन्मुख कब ढोरूँगो चमर ।
कब दोउ अङ्ग लेपूँ चन्दन अगर ?
खबाऊँ तांबूल कब सखी आज्ञा पाय ?
कब सुखी होऊँ भाल तिलक लगाय ?
सुकेलि कौतुक कब देखैंगे नयन ?
चन्द मुख हेरूँगो बैठाय सिंहासन ॥

सदा सो माधुरी लख होय मनोल्लास।
कब दया होय पूछै नरोत्तमदास ?

(४६)

हरि ! कब ऐसी दशा होयगी उदित ?
सेवन करूँगो पद होय आनन्दित ॥
होय मधुकर सेऊँ कमल चरन ।
श्री चरणामृत करूँ सदा आस्वादन ॥
यही आश करूं सुनो सब सखीगन ।
तुमारी कृपा सों होय वांच्छित पूरन ॥
बहुत दिन की आशा पूरी जासों होय।
ऐसी कृपा करो मोपै सब कोय ॥
नरोत्तमदास करै आश दिन निशी।
कृपा कर करो मोय अनुगत दासी ॥

(४७)

जय जय श्रीकृष्ण चैतन्य नित्यानन्द ।
जयाद्वैतचन्द्र जय गौर भक्त वृन्द ॥
कृपा कर सब मिल करो जु करुणा।
अधम पतित जन से न करो घृणा ॥
त्रि संसार में हैं सार तुमारे चरन।
तुम बिन गति न विचार देखो मन ॥
तव पद आश सो दुखित मम चित्त।
व्याकुल हृदय सदा रोवत ही नित्त ॥
कैसै मिलो मोय कछु जानूँ न संधान।
प्रभु लोकनाथ ! तव पद नहीं ज्ञान ॥
तुम हो दयालु प्रभो ! हेरो एक बार।
मेरो नरोत्तम को सु हृदयान्धकार ॥

(४८)

कब कृष्ण धन पाय, हृदय में ताय लाय;
तप्त प्रान करूँ सुशीतल ।
सजाय के निज हिया, बैठाऊँ में प्रान प्रिया;
मुख चन्द देखूँ सु निर्मल ॥
हे सजनि ! कब मेरे होंयगे सुदिन ?
कब प्राणनाथ संग, विचरूँगो कर रंग;
सुखमय यमुना पुलिन ॥
ललिता विशाखा साथ, जाय मिलूँ ब्रजनाथ;
सजाय कै नाना उपहार ।
सदय होय कै विधि, मिलावै जो गुण निधि;
भाग्य कब होय या प्रकार ?
दारुण दैव को नाट, उजाड़ो प्रेम को हाट;
रहन न ताय नैक दयो ।
कहै नरोत्तमदास, जीवन की वृथा आश;
ब्रजेन्द्रनन्दन छांड़ गयो ॥

(४९)

अबकी जो मिलैं मोय चरण युगल ।
राख तिनैं हिय में प्राण करूँ शीतल ॥
ताके बिन देखे हियो जलै कहा करूँ ?
अनल में जरूँ कै तो जल डूब मरूँ ?
मुख दऊँ पान तन चोआ औ चन्दन ।
पौंछ कै पसीना करूँ मृदु मंद पवन ॥
ब्रज के कुसुम पाय गल दऊँ हार ।
बनाय कै बाँधू जूडो केशन सम्हार ॥

भाल पै तिलक दऊँ चन्दन को चन्दा।
नरोत्तम मन जाय फसै प्रीति फन्दा॥

(५०)

[आक्षेप]

वृथा ही मरत मैं बिन गौर भजन।
अवहेला कर खोयो प्रेम सो रतन॥
जतन सों राखी मारी रतन गमायो।
कर्मन के दोष सों ही निज कूँ डुबायो॥
छांड सतसंग बनो असत विलासी।
ताही सों गले में पड़ी कर्म बंध फांसी॥
विषय विषम विष सदा मैंने खायो।
गौरांग कीर्तन रस मन नहीं भायो॥
सुख का पाय प्रान करैं जीवन आश।
क्यों न मरत अब नरोत्तमदास?

(५१)

वृन्दावन रम्याराम, दिव्य चिन्तामणि धाम;
रतन मन्दिर मनोहर।
आवृत कालिंदी नीर, राजहंस राजै तीर;
स्वर्ण पद्म सोहैं अति तर॥
तहाँ हेम पीठ स्थित, अष्ट दल सों वेष्ठित;
दलन में प्रधान नायिका।
ताके बीच रत्नासन, तापैं राजै दोउ जन;
श्याम संग सुन्दरी राधिका॥
सो रूप माधुरी शशी, चूअत अमिय राशि;
करैं परिहास सम्भाषन।
कहै नरोत्तमदास, नित्य लीला सुख आश;
सदा फुरो करैं मेरे मन॥

(५२)

कदंब तरु की डाली, झुकी भूम सोहैं भली;
खिला रहे फूल अनेकन।
भर गयो परिमल, वृन्दावन में सकल;
केलि सुकरत अलिगन॥
राधाकृष्ण करैं लीला रंग।
मधुर सरूपवान, चातुरी की दोउ खान;
राजै मणि आभूषण अंग॥
राधा को दक्षिण कर, पकरकै गिरधर;
मंद मंद मग चले जात।
आगै पीछै सखीगन, करैं फूल बरषन;
कोउ सखि चमर ढुरात॥
पराग सों पूर स्थल, चाँदनी सों सुशीतल;
मणिमय वेदी के ऊपर।
राधाकृष्ण कर जोर, नृत्य करैं चहुँ ओर;
पुलकित तन मिलकर॥
मृगमद सुचन्दन, लिये कर सखीगन;
सुगंधित माल गल साजै।
श्रम जल विंदु विंदु, सुशोभित मुख इन्दु;
अधर मुरली नहीं बाजै॥
सुरस विलास हास, मधुर मधुर भाष;
नरोत्तम मनोरथ भरैं।
युगल विचित्र वेश, कुसुम रचित केश;
लोचन मोहन लीला करैं॥

(५३)

आज की निशा में घिरे रस मेघ राशी।
भये प्रेम मग्न सब वृन्दावन वासी॥
श्याम घन बरषत प्रेम सुधाधार।
राधिका रंगिनी करैं बिजुरी संचार॥
प्रेम रपटन होय रही मग बीच।
मृगमद कुंकुम चन्दन की है कीच॥
प्रेम की बढ़ी है बाढ़ सूझे नहीं पार।
नरोत्तमदास डूबो चाहे मझधार॥

इति श्रीनरोत्तमठाकुरमहाशय-
विरचित "प्रार्थना" का
हिंदी पद्यानुवाद
समाप्त

श्रीश्रीनरोत्तमठाकुरमहाशयेर प्रार्थना

गौरांग वलिते हवे पुलक शरीर ।
हरि हरि वलिते नयने वहे नीर ॥
आर कवे निताइचाँद करुणा करिवे ।
संसार वासना मोर कवे तुच्छ हवे ॥
विषय छाडिया कवे शुद्ध हवे मन ।
कवे हाम हेरव सेइ वृन्दावन ॥
रूप रघुनाथ पदे हइवे आकुति ।
कवे हाम वुझव से युगल पिरीति ॥
रूप रघुनाथ पदे रहु मोर आश ।
प्रार्थना करये सदा नरोत्तमदास ॥ १ ॥

(२)

हरि हरि ! कि मोर करम अति मन्द ।
ब्रजे राधाकृष्ण पद ना सेविनु तिल आध;
ना वुझिनु रागेर सम्बन्ध ॥
स्वरूप सनातन रूप रघुनाथ भट्ट युग;
भूगर्भ श्रीजीव लोकनाथ ।
इहाँ सवार पाद-पद्म ना सेविनु तिल आध;
किसे मोर पुरिवेक साध ॥
कृष्णदास कविराज रसिक भकत माझ;
जे रचिल चैतन्य चरित ।
गौर गोविन्द लीला शुनिले गलये शिला;
ना डुविल ताहे मोर चित ॥

ताहार भक्तेर संग ताँर संगे जाँर संग;
तार संगे नैल केन वास ।
कि मोर दुःखेर कथा जनम गोङानु वृथा;
धिक् धिक् नरोत्तमदास ॥ २ ॥

(३)

राधाकृष्ण ! निवेदन एइ जन करे ।
दोँह अति रसमय सकरुण हृदय;
अवधान कर नाथ मोरे ॥
हे कृष्ण गोकुल चन्द्र हे गोपी प्राण वल्लभ;
हे हे कृष्णप्रिया शिरोमणि ।
हेन गौरी श्याम गाय श्रवणे परश पाय;
गुन शुनि जुडाय पराणी ॥
अधम दुर्गति जने केवल करुणा मने;
त्रिभुवने ए यश खेयाति ।
शुनिया साधुर मुखे शरण लईनु सुखे;
उपचिले नाहि मोर गति ॥
जय राधे जय कृष्ण जय जय राधे कृष्ण;
कृष्ण कृष्ण जय जय राधे ।
अञ्जलि मस्तके धरि नरोत्तम भूमे पड़ि
कहे दोंहे पुराओ मन साधे ॥ ३ ॥

(४)

हरि हरि ! हेन दिन हइबे आमार ।
दोँह अङ्ग निरखिब दोँह अङ्ग परशिब
सेवन करिब दोँहाकार ॥
ललिता विशाखा संगे सेवन करिब रंगे;
माला गाँथि दिब नाना फुले ।

कनक सम्पुटि करि कर्पूर ताम्बुल भरि;
योगाइब वदन कमले ॥
राधा कृष्ण श्री चरण सेइ मोर प्राणधन;
सेइ मोर जीवन उपाय ।
जय पतित पावन देह मोरे एइ धन;
तुया विने अन्य नाहि भाय ॥
श्री गुरु करुणा सिन्धु अधम जनार वन्धु;
लोकनाथ लोकेर जीवन ।
हा हा प्रभु ! कर दया देह मोरे पद छाया;
नरोत्तम लइल शरण ॥ ५ ॥

(५)

हरि हरि ! विफले जनम गोङाइनु ।
मनुष्य जनम पाइया राधाकृष्ण ना भजिया;
जानिया शुनिया विष खाइनु ॥
गोलोकेर प्राणधन हरिनाम संकीर्त्तन
रति ना जन्मिल केन ताय ।
संसार विषानले दिवा निशि हिया ज्वले;
जुडाइते ना कैनु उपाय ॥
ब्रजेन्द्र नन्दन जेइ शचीसुत हैल सेइ;
वलराम हइल निताइ ।
दीन हीन जत छिल हरिनामे उद्धारिल
तार साक्षी जगाइ माधाइ ॥
हा हा प्रभु नन्दसुत वृषभानुसुता युत
करुणा करह एइ वार ।
नरोत्तमदास कय ना ठेलिह राङ्गा पाय;
तोमा बिने के आछे आमार ॥ ५ ॥

(६)

हरि हरि कवे मोर हइवे सुदिन ।
भजिव से राधाकृष्ण हञा प्रेमाधीन ॥
सुयन्त्रे मिशाये गाब सुमधुर तान ।
आनन्दे करिब दोँहार रूप गुण गान ॥
"राधिका" "गोविंद" वलि कान्दिब उच्चैः स्वरे ।
भिजिवे सकल अङ्ग नयनेर नीरे ॥
एइवार करुणा कर ललिता विशाखा ।
सख्य भावे मोर प्रभु सुवलादि सखा ॥
सवे मिलि कर दया पुरुक मोर आश ।
प्रार्थना करये सदा नरोत्तमदास ॥ ८ ॥

(७)

प्राणेश्वर निवेदन एइ जन करे ।
गोविन्द गोकुलचन्द्र परम आनन्दकन्द;
गोपीकुल प्रिय देख मोरे ॥
तुया प्रिय पदसेवा एइ धन मोरे दिवा;
तुमि प्रभु करुणार निधि ।
परम मंगल यश श्रवणे परम रस;
कार किवा कार्य्य नहे सिद्धि ॥
दारुण संसार गति विषयेते लुब्ध मति;
तुया विस्मरण शेल बुके ।
जर जर तनु मन अचेतन अनुक्षण;
जीयन्ते मरण भेल दुःखे ॥
मो बड अधम जने कर कृपा निरीक्षणे;
दास करि राख वृन्दावने ।
श्रीकृष्ण चैतन्य नाम प्रभु मोर गौर धाम;
नरोत्तम लइल शरणे ॥ ७ ॥

(८)

गोविन्द गोपीनाथ ! कृपा करि राख निज पदे ।
काम क्रोध छय जने लये फिरे नाना स्याने;
विषय भुञ्जाय नाना मते ॥
हइया मायार दास करि नाना अभिलाष;
तोमार स्मरण गेल दूरे ।
अर्थ लाभ एइ आशे कपट वैष्णव वेशे;
भ्रमिया वेडाइ घरे घरे ॥
अनेक दुःखरे परे लये छिले व्रजपुरे;
कृपा डोर गलाय वाँधिया ।
दैव माय वलात्कारे खसाइया सेइ डोरे;
भव कूपे दिलेक डारिया ॥
पुनः पदि कृपा करि ए जनार केशे धरि;
टानिया तुलह व्रजधामे ।
तवे से देखिये भाल नतु वा पराण गेल;
कहे दीन दास नरोत्तमे ॥

(९)

मोर प्रभु मदन गोपाल !
श्रीगोविन्द गोपीनाथ तुमि अनाथेर नाथ;
दया कर मुञि अधमेरे ।
संसार सागर घोरे पडियाछि कारागारे;
कृपा डोरे वान्धि लह मोरे ॥
अधम चण्डाल आमि दयार ठाकुर तुमि;
सुनियाछि वैष्णवेर मुखे ।
ए वड भरोसा मने लये फेल वृन्दावने;
वंशीवट जेन देखि सुखे ॥

कृपा कर आगु गुरि लह मोरे केशे धरि;
श्री यमुना देह पद छाया।
अनेक दिनेर आश नहे जेन नैराश;
दया कर ना करिह माया॥
अनित्य शरीर धरि आपन आपन करि;
पाछे पाछे शमनेर भय।
नरोत्तमदास भने प्राण कान्दे रात्रि दिने;
पाछे ब्रज प्राप्ति नाहि हय॥ ९॥

(१०)

धन मोर नित्यानन्द पति मोर गौरचन्द्र;
प्राण मोर युगल किशोर।
अद्वैत आचार्य्य वल गदाधर मोर कुल;
नरहरि विलासइ मोर॥
वैष्णवेर पदधूलि ताहे मोर स्नान केलि;
तर्पण मोर वैष्णवेर नाम।
विचार करिया मने भक्तिरस आस्वादने;
मध्यस्थ श्रीभागवतपुराण॥
वैष्णवेर उच्छिष्ट ताहे मोर मन निष्ठ;
वैष्णवेर नामेते उल्लास।
वृन्दावने चबूतरा ताहे मोर मन घेरा॥
कहे दीन नरोत्तमदास॥ १०॥

(११)

निताइ पद कमल कोटि चन्द्र सुशीतल;
जे छायाय जगत जुडाय।
हेन निताइ बिने भाइ राधाकृष्ण पाइते नाइ;
दृढ़ करि धर निताइयेर पाय॥

से सम्बन्ध नाहिं जार वृथा जन्म गेल तार;
सेइ पशु बड़ दुराचार।
निताइ ना बलिल मुखे मजिल संसार सुखे;
विद्याकुले कि करिबे तार॥
अहङ्कारे मत्त हइया निताइ पद पासरिया;
असत्येरे सत्य करि मानि।
निताइयेर करुणा हबे ब्रजे राधाकृष्ण पावे;
भज निताइयेर चरण दुखानि॥
निताइ चरण सत्य ताँहार सेवक नित्य;
निताइ पद सदा कर आश।
नरोत्तम वड दुःखी निताइ मोरे कर सुखी:
राख राङ्गा चरणेर पाश॥ ११॥

(१२)

भाइ भाइ! भज मोर गौराङ्ग चरण।
ना भजिया मैनु दुखे डुबि गृह विष कूपे;
दग्ध कैल ए पाँच पराण॥
तापत्रय विषानले अहर्निशि हिया ज्वले;
देह सदा हय अचेतन।
रिपु वश इन्द्रिय हइल गोरा पद पास रिल;
विमुख हइल हेन धन॥
हेन गौर दयामय छाड़ि सब लाज भय;
काय मने लओरे शरण।
पामर दुर्म्मति छिल तारे गोरा उद्धारिल;
तारा हइल पतित पावन॥
गोरा द्विज नट राजे वान्धह हृदय माझे;
कि करिबे संसार शमने।

नरोत्तम दास कहे गोरा सम केह नहे;
ना भजिते देन प्रेम धने ॥ १२ ॥

(१३)

गौरांगेर दुटी पद जार धन सम्पद
से जाने भकति रस सार
गौरांगेर मधुर लीला जार कर्णे प्रवेशिला;
हृदय निर्म्मल भेल तार ॥
जे गौरांगेर नाम लय तार हय प्रेमोदय;
तारे मुञि जाइ वलिहारी।
गौराङ्ग गुणेते झुरे नित्य लीला तारे स्फुरे;
से जन भकति अधिकारी ॥
गौरांगेर सङ्गी गणे नित्य सिद्ध करि माने;
से जाय व्रजेन्द्र सुत पाश।
श्री गौडमण्डल भूमि जेवा जाने चिन्तामणि;
तार हय व्रज भूमे वास ॥
गौर प्रेम रसार्णवे से तरङ्गे जेवा डुवे;
से राधा माधव अन्तरङ्ग।
गृहे वा वनेते थाके हा गौराङ्ग वले डाके;
नरोत्तम मागे तार सङ्ग ॥ १३ ॥

(१४)

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु दया कर मोरे।
तोमा बिने के दयालु जगत संसारे ॥
पतित पावन हेतु तव अवतार।
मो सम पतित प्रभु ना पाइवे आर ॥
हा हा प्रभु नित्यानन्द प्रेमानन्द सुखी।
कृपावलोकन कर आमि बड दुःखी ॥

दया कर सीता पति अद्वैत गोसाइं ।
तब कृपा बले पाइ चैतन्य निताइ ॥
हा हा स्वरूप सनातन रूप रघुनाथ ।
भट्ट युग श्रीजीव हा प्रभु लोकनाथ ॥
दया कर श्री आचार्य्य प्रभु श्रीनिवास ।
रामचन्द्र संग मागे नरोत्तमदास ॥ १४ ॥

(१५)

जे आनिल प्रेमधन करुणा प्रचुर ।
हेन प्रभु कोथा गेला आचार्य्य ठाकुर ॥
काँहा मोर स्वरूप रूप काँहा सनातन ।
काँहा दास रघुनाथ पतित पावन ॥
काँहा मोर भट्टयुग काँहा कविराज ।
एक काले कोथा गेला गोरा नटराज ॥
पाषाणे कुटिव माथा अनले पशिव ।
गौराङ्ग गुनेर निधि कोथा गेले पाव ॥
से सब सङ्गीर संगे जे कैल विलास ।
से सङ्ग ना पाञा कान्दे नरोत्तमदास ॥ १५ ॥

(१६)

हरि हरि ! वड शेल मरमे रहिल ।
पाइया दुर्ल्लभ तनु,श्रीकृष्ण भजन बिनु,जन्म मोर विफल हइल ॥
ब्रजेन्द्र नन्दन हरि, नवदीपे अवतरि, जगत भरिया प्रेम दिल ।
मुञि सेपामर मति,विशेषे कठिन अति,तेइँ मोरे करुणा नहिल ॥
स्वरूपसनातन रूप, रघुनाथ भट्टयुग, ताहाते ना हैल मोर रति ।
दिव्य चिंतामणि धाम,वृन्दावन हेन स्थान,सेइ धामे ना कैनुवसति ॥
विशेष विषये मति, नहिल वैष्णवे रति, निरन्तर खेद उठे मने ।
नरोत्तमदास कहे, जीवार उचित नहे, श्रीगुरुवैष्णव सेवा विने ॥

(१७)

ठाकुर वैष्णव पद, अवनीर सम्पद, शुन भाइ हञा एक मने।
आश्रय लइया सेवे,सेइ कृष्ण भक्तिलभे, आर सब मरे अकारणे॥
वैष्णव चरण जल, प्रेमभक्ति दिते बल, आर केह नहै बलवन्त।
वैष्णव चरण रेणु, मस्तके भूषण बिनु,आर नाहि भूषणेरअन्त॥
तीर्थ जल पवित्र गुणे, लिखियाछे पुराणे,से सब भक्तिर प्रपंचन।
वैष्णवेर पदोदक, सम नहे एइ सब, जाते हय वाञ्छित पूरण॥
वैष्णव संगेते मन, आनन्दित अनुक्षण, सदा हय कृष्ण पर संग।
दीन नरोत्तम कान्दे,हिया धैर्य्यनाहिवान्धे,मोर दशा केनहैलभंग॥

(१८)

ठाकुर वैष्णवगण, ! करिएइ निबेदन, मो वड अधम दुराचार।
दारुण संसार निधि, ताहे डुवाइल बिधि,केशे धरि मोरे कर पार॥
विधिवड वलवान, ना शुने धरम ज्ञान, सदाइ करम पाशे वांधे।
ना देखि तारण लेश,जत देखि सब क्लेश,अनाथ कातरे तेञकांदे॥
काम क्रोध लोभ मोह,मद अभिमान सह,आपन-आपन स्थानेटाने।
आमार ऐछन मन, फिरे जेन अंध जन, सुपथ-विपथ नाहि जाने॥
ना लइनु सत मत,असते मजिल चित,तुया पाये ना करिनु आश।
नरोत्तमदासे कय, देखि शुनि लागे भय, तराइया लह निज पाश॥

(१९)

एइ वार करुणा कर वैष्णव गोसाञि।
पतित पावन तोमा विने केह नाइ॥
काहार निकटे गेले पाप दूरे जाय।
एमन दयाल प्रभु केवा कोथा पाय॥
गँगार परश हइले पश्चाते पावन।
दर्शने पवित्र कर एइ तोमार गुण॥

हरिस्थाने अपराधे तारे हरि नाम ।
तोमा स्थाने अपराधे नाहिक एडान ॥
तोमार हृदये सदा गोविन्द विश्राम ।
गोविन्द कहेन मम वैष्णव पराण ॥
प्रति जन्मे करि आशा चरणेर धूलि ।
नरोत्तमे कर दया आपनार वलि ॥

(२८)

कि रूपे पाइव सेवा मुइ दुराचार ।
श्री गुरु वैष्णवे रति ना हैल आमार ॥
अशेष मायाते मन मगन हइल ।
वैष्णवेते लेश मात्र रति ना जन्मिल ॥
गले फाँस दिते फिरे माया से पिचाशी ।
विषये भुलिया अन्ध हैनु दिवानिशि ॥
इहारे करिया जय छाडान ना जाय ।
साधु कृपा विना आर नाहिक उपाय ॥
अदोष दरशि प्रभु पतित उद्धार ।
एइ बार नरोत्तमे करह निस्तार ॥

(२१)

हरि हरि ! कि मोर करम अभाग ।
विफले जनम गेल, हृदये रहिल शेल, नाहि भेल हरि अनुराग ॥
यज्ञ-दान तीर्थ-स्नान, पुण्य-कर्म जप ध्यान, अकारणे सवे गेल मोहे ।
बुझिलाम मने हेन, उपहास हय जेन, वस्त्रहीन अलङ्कार देहे ॥
साधुमुखे कथामृत, शुनिया विमल चित, नाहि भेल अपराध कारण ।
सतत असत सङ्ग, सकलि हइल भंग, कि करिव आइले शमन ॥
श्रुति स्मृति सदा कय, शुनियाछि एइ हय, हरि पद अभय शरण ।
जनम लइया सुखे कृष्ण ना वलिनु मुखे, ना करिनु से रूप भावन ॥

राधाकृष्ण दुँहु पाय, तनु मन रहु ताय, आर दूरे जाउक वासना।
नरोत्तमदासे कय, आर मोर नाहि भय, तनु मन सँपिनु आपना॥

(२२)

हरि हरि! आर कि एमन दशा हव।
ए भव संसार त्यजि परम आनन्दे मजि;
आर कवे ब्रजभूमे जाव॥
सुखमय वृन्दावन कवे हवे दरशन;
से धूलि लागिवे बबे गाय।
प्रेमे गद गद हैञा राधाकृष्ण नाम लैञा;
कान्दिया बेडाइव उभराय॥
निभृते निकुञ्जे जाञा अष्टांगे प्रणाम हैञा;
डाकिव हा राधानाथ बलि।
कवे यमुनार तीरे परश करिब नीरे;
कवे पिव करपुटे तुलि॥
आर कवे एमन हव, श्री रासमंडले जाव;
कवे गडागडि दिव ताय।
बंशीवट छाया पाञा परम आनन्द हञा;
पडिया रहिव तार छाय॥
कवे गोवर्द्धन गिरि देखिव नयन भरि;
कवे हवे राधाकुण्डे वास।
भ्रमिते भ्रमिते कवे ए देह पतन हवे;
कहे दीन नरोत्तमदास॥ २३॥

(२३)

हरि हरि आर कवे पालटिवे दशा।
ए सब करिया वामे जाव वृन्दावन धामे;
एइ मने करियाछि आशा॥

धन जन पुत्र दारे ए सब करिया दूरे;
एकान्त हइया कवे जाव ।
सब दुःख परिहरि वृन्दावने वास करि;
माधुकरी मागिया खाइव ॥
यमुनार जल जेन अमृत समान हेन;
कवे पिव उदर पूरिया ॥
कवे राधाकुण्ड जले स्नान करि कुतूहले;
श्यामकुण्डे रहिव पडिया ॥
भ्रमिव द्वादश वने रस केलि जे जे स्थाने;
प्रेमावेशे गडागडि दिया ।
सुधाइव जने जने ब्रजवासि गण स्थाने;
निवेदिव चरणे धरिया ॥
भजनेर स्थान कवे नयन गोचर हवे;
आर जत आछे उपबन ।
तार मध्ये वृन्दाबन नरोत्तमदासेर मन;
आशा करे युगल चरण ॥ २३ ॥

(२४)

करंग कौपीन लञा छेँडा कान्था गाय दिया;
तेयागिव सकल विषय ।
कृष्णे अनुराग हवे, ब्रजेर निकुञ्जे कवे;
जाइया करिव निजालय ॥
हरि हरि ! कवे मोर हइवे सुदिन ।
फलमूल वृन्दावने खाञा दिवा-अवसाने;
भ्रमिव हइया उदासीन ॥
शीतल यमुना जले, स्नान करि कुतूहले;
प्रेमा वेशे आनन्दित हञा ।

वाहुर उपर वाहु तुलि वृन्दावने कुलि कुलि;
कृष्ण वलि वेडाव कान्दिया ॥
देखिव संकेत स्थान जुडावे तापित प्राण;
प्रेमावेशे गडागडि दिव ।
काँहा राधा ! प्राणेश्वरि ! काँहा गिरिवर धारि !
काँहा नाथ ! वलिया डाकिव ॥
माधवी कुञ्जेरोपरि, सुखे वसि शुक शारी;
गाइवेक राधाकृष्ण रस ।
तरुमूले वसि ताहा शुनि जुडाइवे हिया;
कवे सुखे गोङाव दिवस ॥
श्री गोविन्द गोपीनाथ श्रीमती राधिका साथ;
देखिव रतन सिंहासने ।
दीन नरोत्तमदास करिये दुर्लभ आश;
एमति हइवे कत दिने ॥ २४ ॥

(२५)

हांर हरि ! कवे हव वृन्दावनवासी ।
निरखिव नयने युगल रूपराशि ॥
त्यजिया शयन सुख विचित्र पालङ्क ।
कवे व्रजेर धूलाय धूसर हवे अङ्ग ॥
षडरस भोजन दूरे परिहरि ।
कवे व्रजे मागिया खाइव माधुकरी ॥
परिक्रमा करिया वेडाव बने बने ।
विश्राम करिव जाइ यमुना पुलिने ॥
ताप दूर करिव शीतल वंशीवटे ।
(कवे) कुञ्जे बैठव हाम वैष्णव निकटे ॥
नरोत्तमदास कहे करि परिहार ।
कवे वा एमन दशा हइबे आमार ॥ २५ ॥

(२६)

आर कि एमन दशा हव। सब छाड़ि वृन्दाबने जाव॥
आर कवे श्रीरास मण्डले। गड़ागड़ि दिव कुतूहले॥
आर कवे गोवर्द्धन गिरि। देखिव नयन युग भरि॥
श्यामकुंडे राधाकुंडे स्नान। करि कवे जुडाव पराण॥
आर कवे यमुनार जले। मज्जने हइव निरमले॥
साधुसंगे वृन्दाबने वास। नरोत्तम दास करे आश॥

(२७)

राधा कृष्ण सेवों मुञि जीवने मरणे।
ताँर स्थान ताँर लीला देखो रात्रि दिने॥
जे स्थाने जे लीला करे युगल किशोर।
सखीर सङ्गिनी हञा ताहे हङ मोर॥
श्रीरूपमञ्जरी पद सेवों निरवधि।
ताँर पाद पद्म मोर मन्त्र महौषधि॥
श्रीरतिमञ्जरि देवि ! मोरे कर दया।
अनुक्षण देह तुया पाद पद्म छाया॥
श्रीरसमञ्जरि देवि ! कर अवधान।
अनुक्षण देह तुया पाद पद्म ध्यान॥
वृन्दावने नित्य नित्य युगल विलास।
प्रार्थना करये सदा नरोत्तमदास॥

(२८)

राधाकृष्ण प्राण मोर युगल किशोर।
जीवने मरणे गति आर नाहि मोर॥
कालिन्दीर कुले केलि कदम्वेर वन।
रतन वेदीर उपर वसाव दुजन॥
श्याम गौरी अंगे दिव(चुया) चन्दनेर गन्ध।
चामर दुलाव कवे हेरिव मुख चन्द्र॥

गाँथिया मालतीर माला दिव दोँहार गले।
अधरे तुलिया दिव कर्पूर ताम्बूले॥
ललिता विशाखा आदि जत सखीवृंद।
आज्ञाय करिव सेवा चरणारविन्द॥
श्रीकृष्णचैतन्य प्रभुर दासेर अनुदास।
सेवा अभिलाष करे नरोत्तमदास॥

(२९)

हरि हरि ! कवे मोर हइवे सुदिन।
केलि कौतुक रंगे करिव सेवन॥

ललिता विशाखा सने, जतेक सखीर गणे, मंडली करिव दोँहा मेलि।
राइकानु करे धरि, नृत्य करे फिरि फिरि, निरखि गोङाव कुतूहली॥
अलस विश्राम घरे, गोवर्द्धन गिरिवरे, राइ कानु करिवे शयने।
नरोत्तमदासे कय, एइ जेन मोर हय, अनुक्षण चरण सेवने॥२९॥

(३०)

गोवर्द्धन गिरिवर, परम निर्ज्जन स्थल, राइ कानु करिवे शयने।
ललिता विशाखा संगे, सेवन करिव रंगे, सुखमय रातुल चरणे॥
कनक सम्पुट करि, कर्पूर ताम्बूल पुरि, जोगाइव वदन कमले।
मणिमय किङ्किणी, रतननूपुर आनि, पराइव चरण युगले॥
कनक कटोरा पुरि, कर्पूर चन्दन भरि, कवे दिव दुजनार गाय।
मल्लिका मालती यूथी,नाना फुले माला गाथि,कवे दिव दोँहार गलाय॥
सुवर्णेर झारि करि, राधाकुंडे जल पुरि, दोँहाकार अंगेते राखिव।
गुरु रूपा सखी वामे, त्रिभंग भङ्गिम ठामे, चामरेर वातास करिव॥
दोँहार कमल आँखि, पुलक हइया देखि, दुँहु पद परशिव कवे।
चैतन्यदासेर दास, मने मात्र अभिलाष, नरोत्तमदासे सदा स्फुरे॥

(३१)

हरि हरि ! आर कि एमन दशा हव ।
कवे वृषभानुपुरे, आहीरी गोपेर घरे, तनया हइया जनमिव ॥
यावटे आमार कवे, ए पाणिग्रहण हवे, वसति करिव कवे ताय ।
सखीर परम श्रेष्ठ, जे ताहार हय प्रेष्ठ, सेवन करिव तार पाय ॥
तेँह कृपावान हैया, रातुल चरणे लञा, आमारे करिवे समर्पण ।
सफल हइवे दशा, पुरिवे मनेर आशा, सेवि दुँहार युगल चरण ॥
वृन्दावने दुइ जन, चतुर्दिके सखीगण, सेवन करिव अवशेषे ।
सखीगण चारि भिते, नाना यन्त्र लैया हाथे, देखिव मनेर अभिलाषे ॥
दुँइ चाँदमुखदेखि, जुड़ावे तापित आँखि, नयने वहिवे अश्रुधार ।
वृंदार निदेश पाव, दोहार निकटे जाव, हेन दिन हइवे आमार ॥
श्रीरूपमञ्जरी सखी, मोरे अनाथिनी देखि, राखिवे रातुल दुटी पाय ।
नरोत्तमदास भणे, प्रिय नर्म्म सखीगणे, कवे दासी करिवे आमाय ॥

(३२)

हरि हरि आर कि एमन दशा हव ।
छाड़िया पुरुष देह, कवे वा प्रकृति हव, दुँहु अंगे चन्दन पराव ॥
टानिया बाँधिव चूडा, नव गुञ्जाहारे वेडा, नाना फुले गाँथि दिवहार ।
पीतवसन अंगे, पराइव सखी संगे, वदने ताम्बूल दिव आर ॥
दुँहु रूप मनोहारी, हेरिव नयन भरि, नीलाम्बरे राइ साजाइया ।
नवरत्न जरि आनि, बाँधिव विचित्रवेणी, ताहे फुलमालती गाँथिया ॥
से ना रूप माधुरी, देखिव नयन भरि, एइ करि मने अभिलाष ।
जय रूप सनातन, देह मोरे एइ धन, निवेदये नरोत्तमदास ॥

(३३)

प्राणेश्वरि ! एइवार करुणा कर मोरे ।
दशनेते तृण धरि, अञ्जलि मस्तके फरि, एइजन निवेदन करे ॥
प्रिय सहचरी संगे, सेवन करिव रंगे, अंगे वेश करिवेक साधे ।

राइ एइ सेवाकाजे, निजपदपङ्कजे, प्रिय सहचरी गण माझे ॥
सुगन्धि चन्दन, मणिमय आभरण, कौषिक वसन नाना रंगे।
एइ सब सेवा जाँर, दासी जेन हञ ताँर, अनुक्षण थाकि ताँर संगे ॥
जल सुवासित करि, रतन भृंगारे भरि, कर्पूर वासित गुया पान।
ए सब साजाइया डाला, लवंगमालतीमाला, भक्ष्य द्रव्यनाना अनुपाम॥
सखीर इङ्गित हवे, ए सब आनिया कवे, योंगाइव ललितार काछे।
नरोत्तमदास कय, एइ जेन मोर हय, दाँडाइया रहु सखीर पाछे ॥

(३४)

अरुण कमल दले, शेज बिछाइव, वसाइव किशोर किशोरी।
अलका आवृतमुख, पंकज मनोहर, मरकत श्याम हेम गोरी ॥
प्राणेश्वरि ! कवे मोर हवे कृपादिठि।
आज्ञाय आनिया कवे, विविध फुलवर, शुनव वचन दुँहु मिठि ॥
मृगमद तिलक, सिन्दुर वनायव, लेपव चन्दन गन्धे।
गाँथि मालतीफुल, हार पहिरा-ओव, धाओयाय मधुकर वृन्दे ॥
ललिता कवे मोर, वीजन देओयव, वीजव मारुत मन्दे।
श्रमजल सकल, मिटिव दुँहु कलेवर, हेरव परम आनन्दे ॥
नरोत्तमदास, आश पद पंकज, सेवन माधुरी - पाने।
होओयव हेन दिन, ना देखिये कोन चिन्ह, दुँहजन हेरव नयाने ॥

(३५)

कुसुमित वृन्दावने, नाचत शिखिगणे, पिककुल भ्रमर झङ्कारे।
प्रिय सहचरी संगे, गाइया जाइये रंगे, मनोहर निकुञ्ज कुटीरे ॥
हरि हरि मनोरथ फलिवे आमारे।
दुँहुक मन्थर गति, कौतुके हेरव अति, अंग भरि पुलक अन्तरे।
चौदिके सखीर माझे, राधिकार इङ्गिते, चिरुणी लइया करे करि।
कुटिल कुंतल सव, विथरिया आँचरव, बनाइव विचित्र कबरी ॥

मृगमद मलयज, सब अंगे लेपव, पराइव मनोहर हार।
चन्दन कुंकुमे, तिलक बनाइव, हेरव मुख सुधाकर॥
नीलपट्टाम्बर, जतने पराइव, पाये दिव रतन मञ्जीरे।
भृङ्गारेर जले रांगा, चरण धोयाइव, मुछव आपन चिकुरे॥
कुसुम कमल दले, शेज बिछाइव, शयन कराव दोँहाकारे।
धवल चामर आनि, मृदु मृदु वीजब, छरमित दुँहुक शरीरे॥
कनक सम्पूट करि, कर्पूर ताम्बूल भरि, जोगाइव दोँहार वदने।
अधर सुधारसे, ताम्बूल सुवासे, भोखव अधिक जतने॥
श्रीगुरुकरुणासिन्धु, लोकनाथ दीनबन्धु, मुइ दिने कर अवधान।
राधाकृष्ण बृन्दावन, प्रिय नर्म्म सखीगण, नरोत्तम मागे एइ दान॥

(३६)

हरि हरि ! कवे मोर हइबे सुदिन।
गोवर्द्धन गिरिवरे, परम निभृत घरे, राइ कानु कराव शयन॥
भृंगारेर जले रांगा, चरण धोयाइव, मुछाव आपन चिकुरे।
कनक सम्पूट करि, कर्पूर ताम्बूल पुरि, जोगाइव दुहुँक अधरे॥
प्रिय सखीगण संगे, सेवन करिव रंगे, चरण सेविव निज करे।
दुँहुक कमल दिठि, कौतुके हेरव, दुँहु अंग पुलक अन्तरे॥
मल्लिका मालती यूथी, नाना फुले माला गाँथि, कवे दिव दोँहार गलाय।
सोनार कटोरा करि, कर्पूर चन्दन भरि, कवे दिव दोँहाकार गाय॥
आर कवे एमन हब, दुँहुमुख निरखिव, लीलारस निकुञ्ज शयने।
श्रीकुन्दलतार संगे, केलि कौतुक रंगे, नरोत्तम करिवे श्रवणे॥

(३७)

प्रभु हे ! एइवार करह करुणा।
जुगल चरण देखि, सफल करिव आँखि, एइ मोर मनेर कामना॥
निज पद सेवा दिवा, नाहि मोरे उपेखिवा, दुँहु पँहु करुणा सागर।
दुँहु बिनु नाहि जानो, एइ बड़भाग्य मानो, मुइ वड पतित पामर॥

ललिता आदेश पाञा, चरण सेविव जाञा, प्रिय सखी सङ्गे हय मने।
दुँहु दाता शिरोमणि, अति दीन मोरे जानि, निकटे चरण दिवे दाने॥
पाव राधाकृष्ण पा, घुविवे मनेर घा, दूरे जावे ए सब विकल।
नरोत्तमदासे कय, एइ वाञ्छा सिद्धि हय, देह प्राण सकल सफल॥

(३८)

हरि हरि ! कि मोर करम अनुरत।
विषये कुटिलमति, सत्संगे ना हैल रति, किसे आर तरिवार पथ॥
स्वरूप सनातन रूप, रघुनाथ भट्टयुग, लोकनाथ सिद्धान्त सागर।
शुनितास से सब कथा, घुचित मनेर व्यथा, तवे भाल हइत अन्तर॥
जखन गौर नित्यानन्द, अद्वैतादि भक्तवृंद, नदीयानगरे अवतार।
तखन ना हैल जन्म, एवे देहे किवा कर्म्म, मिछामात्र वहि फिरि भार॥
हरिदास आदि वुले, महोत्सव आदि करे, ना हेरिनु से सुख विलास।
कि मोर दुःखेर कथा, जनम गोङानु बृथा, धिक्धिक् नरोत्तमदास॥

(३९)

श्रीरूपमञ्जरी पद, सेइ मोर सम्पद, सेइ मोर भजन पूजन।
सेइ मोर प्राणधन, सेइ मोर आभरण, सेइ मोर जीवनेर जीवन॥
सेइ मोर रसनिधि, सेइ मोर वाञ्छासिद्धि, सेइ मोर वेदेर धरम।
सेइ व्रत सेइ तप, सेइ मोर मन्त्र जप, सेइ मोर धरम करम॥
अनुकूल हवे विधि, से पदे हइवे सिद्धि, निरखिव ए दुइ नयाने।
से रूप माधुरी राशि, प्राण कुवलय शशी, प्रफुल्लित हवे निशि दिने॥
तुया अदर्शन अहि, गरले जारल देही, चीर दिन तापित जीवन।
हाहा प्रभु ! कर दया, देह मोरे पद छाया, नरोत्तम लइल शरण॥

(४०)

शुनियाछि साधु मुखे वले सर्व्वजन।
श्रीरूप कृपाय मिले युगल चरण॥
हा हा प्रभु सनातन गौर परिवार।
सवे मिलि वाञ्छा पूर्ण करह आमार॥

श्रीरूपेर कृपा जेन आमा प्रति हय।
से पद आश्रय जार सेइ महाशय॥
प्रभु लोकनाथ कवे संगे लइया जावे।
श्रीरूपेर पाद पद्मे मोरे समर्पिवे॥
हेन कि हइवे मोर नर्म्म सखी गणे।
अनुगत नरोत्तमे करिवे शासने॥

(४१)

एइ नव दासी वलि श्रीरूप चाँहिवे।
हेन शुभक्षण मोर कत दिने हवे॥
शीघ्र आज्ञा करिवेन "दासी एथा आय।
सेवार सुसज्जा कार्य करह त्वराय"॥
आनन्दित हञा हिया ताँर आज्ञा बले।
पवित्र मनेते कार्य्य करिव तत्काले॥
सेबार सामग्री रत्न थालेते करिया।
सुवासित वारि स्वर्णभारिते पुरिया॥
दुँहार सन्मुखे लये दिव शीघ्र गति।
नरोत्तमेर दशा कवे इइवे एमति॥

(४२)

श्रीरूप पश्चाते आमि रहिव भीत हञा।
दोँहे पुन कहिवेन आमा पाने चाञा॥
सदय हृदये दोँहे कहिवेन हासि।
कोथाय पाइले रूप ! एइ नव दासी॥
श्रीरूपमञ्जरी तवे दोँहवाक्य शुनि।
मञ्जुलाली दिल मोरे एइ दासी आनि॥
अति नम्रचित्त आमि इहारे जानिल।
सेवाकार्य्य दिया तवे हेथाय राखिल॥

हेन तत्व दोँहाकार साक्षाते कहिया।
नरोत्तमे सेवाय दिवे नियुक्त करिया॥

(४३)

हा हा प्रभु! लोकनाथ! राख पादद्वन्द्वे।
कृपा दृष्टे चाह यदि हइया आनन्दे॥
मनोवाञ्छा सिद्धि तवे हड पूर्णतृष्ण।
हेथाय चैतन्य मिले सेथा राधाकृष्ण॥
तुमि ना करिले दया के करिवे आर।
मनेर वासना पूर्ण कर एइवार॥
ए तिन संसारे मोर आर केह नाइ।
कृपा करि निज पद तले देह ठाञि॥
राधाकृष्ण लीला गुण गाङ रात्रि दिने।
नरोत्तम वाञ्छा पूर्ण नहे तुया विने॥

(४४)

लोकनाथ प्रभु! तुमि दया कर मोरे।
राधाकृष्ण चरणे जेन सदा चित्त स्फुरे॥
तोमार सहिते थाकि सखीर सहिते।
एइ त वासना मोर सदा उठे चिते॥
सखीगण ज्येष्ठ जेँहो ताँहार चरणे।
मोरे समर्पिवे कवे सेवार कारणे॥
तवे से हइवे मोर वाञ्छित पूरण।
आनन्दे सेविव दोँहार युगल चरण॥
श्रीरूपमञ्जरि सखि! कृपा दृष्टे चाञा।
तापि नरोत्तमे सिञ्च सेवामृत दिञा॥

(४५)

हा हा प्रभु! कर दया करुणा तोमार।
मिछा माया जाले तनु दहिछे आमार॥

कवे हेन दशा हवे सखी सङ्ग पाव।
वृन्दावने फुल गाँथि दोंहा के पराव॥
सम्मुखे वसिया कवे चामर डुलाव।
अगुरु चन्दन गन्ध दोँह अंगे दिव॥
सखीर आमाय कवे ताम्बूल जोगाव।
सिन्दूर तिलक कवे दोँहा के पराव॥
विलास कौतुक केलि देखिव नयने।
चन्द्रमुख निरखिव वसाये सिंहासने॥
सदा से माधुरी देखि मनेर लालसे।
कत दिने हबे दया नरोत्तमदासे॥ ४५॥

(४६)

हरि हरि! कबे हेन दशा हबे मोर॥
सेविव दोँहार पद आनन्दे विभोर॥
भ्रमर हइया सदा रहिव चरणे।
श्रीचरणामृत सदा करिव आस्वादने॥
एइ आशा करि आमि यत सखीगण।
तोमादेर कृपाय हय वाञ्छित पूरण॥
वहुदिन वाञ्छाकरि पूर्ण जाबे हय।
सवे मेलि दया कर हइया सदय॥
सेवा आशे नरोत्तम कान्दे दिवा-निशि।
कृपा करि कर मोरे अनुगत दासी॥ ४६

(४७)

जय जय श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्द।
जयाद्वैतचन्द्र जय गौर भक्तवृन्द॥
कृपा करि सवे मेलि करह करुणा।
अधम पतित जने ना करिह घृणा॥

ए तिन संसार माझे तुया पद सार।
भाविया देखिनु मने गति नाहि आर ॥
से पद पावार आशे खेद उठे मने।
व्याकुल हृदय सदा करिये क्रन्दने ॥
किरूपे पाइव किछु ना पाइ सन्धान।
प्रभु लोकनाथ पद नाहिक स्मरण ॥
तुमित दयाल प्रभु चाह एक बार।
नरोत्तम हृदयेर घुचाओ अन्धकार ॥

(४८)

कवे कृष्ण धन पाव हियार माझारे थोव;
जुडाइव ए पाप पराण ।
साजाइया दिव हिया बसाइव प्राणप्रिया;
निरखिव से चन्द्रवयान ॥
हे सजनि ! कवे मोर हइवे सुदिन ।
से प्राणनाथेर संगे कवे वा फिरिव रंगे;
सुखमय यमुना पुलिन ॥
ललिता विशाखा निया ताँहारे भेटिव गिया;
साजाइव नाना उपहार ।
सदय हइया विधि मिलाइवे गुणनिधि;
हेन भाग्य हइवे आमार ॥
दारुण विधिर नाट भाङ्गिल प्रेमेर हाट;
तिल मात्र ना राखिल तार ।
कहे नरोत्तमदास कि मोर जीवने आश;
छाडि गेल व्रजेन्द्रकुमार ॥ ४८ ॥

(४९)

एइ वार पाइले देखा चरण दुखानि।
हियार माझारे राखि जुड़ाव पराणी ॥

तारे ना देखिया मोर मने बड़ ताप।
अनले पशिव किंवा जले दिव झाँप॥
मुखेर मुछाव घाम खाओयाव पान-गुया॥
घामेते वातास दिव चन्दनादि चुया॥
बृन्दावनेर फुलेर गाँथिया दिव हार।
बनाइया वान्धिव चूडा कुन्तलेर भार॥
कपाले तिलक दिव चन्दनेर चाँद।
नरोत्तमदास कहे पिरीतेर फाँद॥ ४६॥

(५०)

गोरा पहुँ ना भजिया मैनु।
प्रेमरतन धन हेलाय हाराइनु॥
अधम यतन करि धन तेयागिनु।
आपन करम दोषे आपनि डुबिनु॥
सत्सङ्ग छाडि कैलु असते विलास।
ते कारणे लागिल जे कर्म्म बन्ध फाँस॥
विषय विषम विष सतत खाइनु।
गौर कीर्त्तन रसे मगन ना हैनु॥
केन वा आछये प्राण कि सुख पाइया।
नरोत्तमदास केन ना गेल मरिया॥ ५०॥

(५१)

बृन्दावन रम्य स्थान दि य चिंतामणि धाम;
रतन मन्दिर मनोहर।
आवृत कालिन्दी नीरे राजहंस केलि करे;
ताहे शोभे कनक कमल॥
तार मध्ये हेम पीठ अष्ट दले वेष्टित;
अष्टदले प्रधान नायिका।

तार मध्ये रत्नासने वसि आछेन दुइ जने;
श्याम संगे सुन्दरी राधिका ॥
ओ रूप लावण्य राशि अमिय पडिछे खसि;
हास्य परिहास सम्भाषणे ।
नरोत्तमदासे कय नित्यलीला सुखमय;
सदाय स्फुरुक मोर मने ॥ ५१ ॥

(५२)

कदम्ब तरुर डाल नामियाछे भूमे भाल;फुटियाछे फुल सारि सारि ।
परिमले भरल सकल वृन्दावने; केलि करे भ्रमरा भ्रमरी ॥
राइकानु विलासइ रंगे ।
किवा रूप लावणि, वैदगध खनि धनि, मणिमय आभरण अंगे ॥
राधार दक्षिण कर, धरि प्रिय गिरिधर, मधुर मधुर चलि जाय ।
आगे पाछे सखीगण,करे फुल वरिषण,कोन सखी चामर ढुलाय ॥
परागे धूसर स्थल, चन्द्र करे सुशीतल, मणिमय वेदीर उपरे ।
राइकानु कर जोडि, नृत्य करे फिरिफिरि, परशे पुलके तनु भरे ॥
मृगमद चन्दन, करे करि सखीगण, बरिखये फुल गन्धराजे ।
श्रम जल बिंदु बिंदु,शोभा करे मुख इन्दु,अधरे मुरली नाहि बाजे ॥
हास विलास रस, सरल मधुर भाष, नरोत्तम मनोरथ भरु ।
दुंहुक विचित्र वेष, कुसुमे रचित केश, लोचन मोहन लीला करु ॥

(५३)

आजि रसे वादर निशि ।
प्रेमे भासिल सब वृन्दावनवासी ॥
श्याम घन बरिखये प्रेम सुधाधार ।
कोरे रङ्गिणी राधा, विजुरी सञ्चार ॥
प्रेमे पिछल पथ गमन भेल वङ्क ।
मृग मद चन्दन कुङ्कुमे भेल पङ्क ॥

दिग विदिग नाहि – प्रेमेर पाथार।
डुबिल नरोत्तम ना जाने साँतार ॥ ५३ ॥

(५४)

हेदेहे नागर वर शुन ओहे मुरलीधर;
निवेदन करि तुया पाये।
चरण नखर मणि जेन चाँदेर गाँथनि;
भाल शोभे आमार गलाय ॥
श्रीदाम सुदाम संगे जखन बने जाओ रंगे;
तखन आमि दुयारे दाँडाये।
मने करि संगे जाइ गुरु जनार भय पाइ;
आँखि रहिल तुया पाने चेये ॥
चाइ नवीन मेघ पाने तुया बँधु ! पड़े मने;
एलाइले केशे नाहि बाँधि।
रन्धन शालाते जाइ तुया बँधु गुण गाइ;
धुँयार छलना करि काँदि ॥
मणि नओ माणिक नओ आँचले बाँधिले रओ;
फुल नओ जे केशे करि वेश।
नारी ना करित विधि तुया हेन गुणनिधि;
लइया फिरिताम देशे देशे ॥
अगुरु चन्दन हइताम तुया अंगे माखारइताम;
घामिया पाँडताम रांगा पाय।
कि मोर मनेर साध वामन हये चाँदे हात;
विधि कि साध पुरावे आमार ॥
नरोत्तम दासे कय तोमार उचित हय;
तुमि आमाय ना छाडिह दया।

जे दिन तोमार भावे आमार ए देह जावे;
सेइ दिने देओ पद छाया ५४

(५५)

हरि वलिव आर मदनमोहन हेरिव गो।
एइ रूपे ब्रजेर पथे कवे चलिव गो॥
जाव गो ब्रजेन्द्रपुर हव गोपिकार नूपुर;
तादेर चरणे मधुर-मधुर बाजिव गो।
विपिने विनोद खेला संगेते राखालेर मेला;
ताँदेर चरणेर धूला माखिव गो॥
राधाकृष्णेर रूप माधुरी हेरिव दु नयन भरि;
निकुञ्जेर द्वारे द्वारी रहिव गो।
तोमरा सब ब्रजवासी पुरा ओ मनेर अभिलाषइ;
कवे श्रीकृष्णेर वाँशी शुनिव गो॥
एइ देह अन्तिम काले राखिव श्रीयमुनार जले;
जय राधा श्रीकृष्ण वले भासिव गो।
कहे नरोत्तम दास ना पूरिल अभिलाष;
कवे हाम ब्रजवास करिव गो॥ २२॥

इति श्री नरोत्तमठाकुर महाशयेर प्रार्थना समाप्ता

श्रील नरोत्तमदासठाकुर महाशय कृत प्रार्थना का पद्यानुवाद

(१)

सत् प्रार्थनात्मिका

गौराङ्ग बोलत होय पुलक शरीर।
हरि हार बोलत नयन बहे नीर॥
अब कब नित्यानन्द करुणा करेंगे।
संसार - वासना मेरी कब वे हरेंगे॥
विषय तियागि कब शुद्ध होंगौ मन।
नेत्र भरि देखूँ कब धाम वृन्दावन॥
रूप रघुनाथ बोलि चटपटी होय।
जुगल पिरीति-रीति बूझौं कब दोय॥
रूप - रघुनाथ - पद रहे मोहि आस।
प्रार्थना करहि सदा नरोत्तदास॥

(२)

दैन्य बोधिका:—

हरि! हरि! कैसौ मेरो भाग अति मन्द।
ब्रज राधा कृष्ण पद नाहिं भजे तिल आध;
नहीं बूझौ राग कौ सम्बन्ध॥
सनातन स्वरूप रूप रघुनाथ भट्टयुग;
भूगर्भ श्रीजीव लोकनाथ।
इनि सर्व पाद-पद्म नाहीं सेये तिला आध;
कैसे मेरी पुरवैगी साध॥
कृष्ण दास कविराज भक्तन रसिक राज:
जिन्ह कह्यौ चैयन्य चरित।
गौर गौविंद लीला सनत गरत शिला;
तामै ना लगत मेरो चित्त॥

जिन्ह सब भक्त सङ्ग जो करे हैं उन सङ्ग;
तिन सङ्ग करयौ नहीं वास।
कैसी मेरी दुःख कथा जनमु गँवायो वृथा;
धिक धिक नरोत्तम दास॥ २॥

(३)

सम्प्रार्थनात्मिका:—

राधा कृष्ण ! निवेदन यह जन करे।
दुहूँ अति रसमय सकरुण हिरदय;
अवधान करो नाथ मोरे॥
हे कृष्ण गोकुलचन्द्र गोपीजन - मन-चन्द्र;
हे कृष्ण प्रेयसी शिरोमणि।
हेम गोरी श्याम गाय श्रवण परसि पाँय॥
सुने गुण जुड़ाय पिराणि॥
अधम दुर्गत जनैं केवल करुणा मनैं;
त्रिभुवन यह यश ख्याति।
सुनि आयो साधु मुख शरण लहत सुख;
उपेक्षा करत मोर घात॥
जय राधे ! जय कृष्ण ! जय जय ! राधेकृष्ण !!
कृष्ण कृष्ण जय जय राधे।
अञ्जुलि मस्तक धरे नरोत्तम भूमि परे;
दोनों हो पुराउ मन साधे॥ ३॥

(४)

स्वाभीष्ट लालसा:—

हरि ! हरि ! ऐसौ दिन कब होय मोरे॥
दुहूँ अङ्ग निरखव, दुहूँ अङ्ग परशव; सेवन करव दुहूँ केरे॥

ललिता-विशाखा संग, सेवन करब रंग, माला गूँथि राखूँ नाना फूल।
कनक सम्पुटि करि, कपूँर ताम्बूलं भरि, जुगाइबु अधर जुगुल॥
राधाकृष्ण वृन्दावन, इहो मोरे प्राणधन, इहो मोर जीवन उपाय।
पतित पावन जय, देहु यही धन-चय, 'तुम बिना अन्य नहिं भाय'॥
श्रीगुरु करुणासिंधु, अधम जनहिं बन्धु, लोकनाथ लोकहि जीवन।
हा! हा! प्रभु करो दया, देहु मोहि पद छाया, नरोत्तम लई है शरन॥

(५)

दैन्य बोधिका:—

हरि! हरि! मैं विफलहि जनमु गँवायो।
मानुष जनमु पायो, राधाकृष्ण नहीं गायो, जानि बूझि विष ही सो खायो॥
गोलोक कौ प्रेम-धन, हरिनाम संकीर्तन, रती ना जनमो क्यों हूँ ताय।
ऐ संसार विषा नले, दिवा-निशि हिया जले, जुड़ाइबो कवन उपाय॥
ब्रजेन्द्र नन्दन जोई, शची सुत भये सोई, बलराम भये हैं निताई।
दीन-हीन जोहू रहे, हरि नाम तारे तिन्हें, साखी जासु जगाई-मधाई॥
हा! हा! प्रभु नन्दसुत, वृषभानु सुता-युत, करुणा करहु येहि बार।
नरोत्तमदास वदे, नाहिं ठेलो निज पदे, तुम बिना कोऊ न हमार॥

(६)

साधक देहोचित लालसा:—(पयार छंद)

हरि! हरि! कब मेरो होयगो सुदिन।
भजूँ जब राधाकृष्ण इच्छा प्रेमाधीन॥
सुमधुर गाऊँ करि यन्त्र-वाद्य तान।
सानंद करहुँ दुहूँ रूप-गुण गान॥
"राधिका-गोविंद" टेरूँ रोय उच्च धार।
अंग-अंग भिजवहुँ अश्रु जल-धार॥
ऐ वार करुणा करो रूप-सनातन।
रघुनाथ दास मेरे श्री जीव जीवन॥

ऐ वार करुणा करो ललिता विशाखा।
सख्य भाव मेरे प्रभु सुबलादि सखा॥
सब मिलि करि दया पूरौ मेरी आस।
प्रार्थना करहि सदा नरोत्तम दास॥

(७)

दैन्य बोधिका:--

प्राणेश्वर ! निवेदन येहि जन करे।

गोविंद गोकुलचन्द्र, परम आनन्द कन्द, गोपीकुल-प्रिय देखु मोरे॥
तव प्रिय पद सेवा, यही धन मेरे दिवा, तुमी प्रभु करुणा के निधि।
परम मंगल यश, श्रवण परशि रस, कियो नाहिं कौन कार्य-सिद्धि॥
दारुण संसार गति, विषम विषय मति, तव विस्मरण शेल सालै।
जर-जर तन-मन, अचेतन अनुक्षन, जिवन-मरण दुख घालै॥
मैं अति अधम जन, करो कृपा निरीक्षन, दास करि राखो वृन्दावन।
श्रीकृष्ण-चैतन्य नाम, प्रभु मोरे गौर धाम, नरोत्तम लही है शरन॥

(८)

दैन्य बोधिका:--

गोविंद ! गोपीनाथ ! कृपा करि राखु निज पाँय।

काम-क्रोध छयजन,लिये फिरें नाना स्थान, नाना भांति विषय भुञ्जाय॥
होय कै ये माया दास, करि नाना अभिलाष, तुम्हरो स्मरण गयो दूर।
अर्थ-लाभ आश-लेश, कपट वैष्णव वेश, भ्रमत फिरत घर-घूर॥
अनेक दुःखनि झूरि, ल्याये अब व्रज पुर, कृपा डोरि मोरे गरे बाँधि।
दैवमाया करि जोर, सोई गिरवाय डोर, भव कूप दियो मोय धाँधि॥
पुनि यदि दया करि, एई जन केश धरि, डारहु झटकि व्रजधाम।
तब यहि देखि भले, नहि कछु पुनि बोले, कहे दीन दास नरोत्तम॥

(९)

दैन्य बोधिका:—

मोरे प्रभु मदन गोपाल ! गोविन्द गोपीनाथ मुहि अधमहिं करु दाया।
संसार-सागर माँझ, डरल रहेऊँ नाथ, मोहि किरपा डोरि धँधाया ॥
अधम चण्डाल मैं हीं,दया को ठाकुर तुहीं,सुन्यौ यहै वैष्णवनि मुख।
बढ़ौ ये भरोसा मन, लै डारौंगे बृन्दावन, बंशीवट देखूँ जाय सुख ॥
कृपा करि आगे आय, केश धरि ल्यो उठाय,श्री यमुना देहु पद-छाया।
बहुत दिनेरी आस, करौंगे न मो निरास, दया करो–न करहु माया ॥
अनित्य ये देह धरे, आपुन-आपुन करे, पाछे-पाछे नाशभय गोय।
नरोत्तमदास भने, प्राण रोवें राति दिने, पाछे ब्रज-प्राप्ति नाहीं होय ॥

(१०)

स्व-निष्ठा:—

धन मोरे नित्यानन्द, पति मोरे गौरचन्द्र, प्राण मोरे जुगल-किशोर।
अद्वैत-आचार्य बल, गदाधर मोर कुल, नरहरि बिलसहि मोर ॥
वैष्णवनि-पद-धूलि, जोई मम स्नान-केलि, तर्पण कों वैष्णवनि नाम।
मन में विचार हेतु, भक्ति रसास्वादु हेतु, मध्यस्थ श्रीभागौत पुरान ॥
वैष्णवनि उच्छिष्ठ, सोई मेरे मन निष्ठ, वैष्णवनि नाम ते उलास।
बृन्दावनस्थ चौंतरी, सोई मोरे मन घेरी, कहे दीन नरोत्तमदास ॥

(११)

मन: शिक्षा:—

निताई पद कमल, कोटि चंद्र सुशीतल, जाकी छाया जगत जुड़ाय।
हो ! निताई बिना भाई,राधाकृष्ण पावो नाई', दृढ़ कै गहु निताई-पाँय॥
ऐसौ ना सम्बन्ध जाकौ,वृथा जन्म गयो ताकौ,सो तो पशु बड़-दुराचार।
निताई न बोल्यौ मुख, डूब्यौ है संसार सुख,विद्या-कुल करें का तुहार॥
अहंकार मत्त होय, निताई-पद पाश खोय, असतहि सत करि माखे।
जो निताई दया आवे, ब्रजे राधाकृष्ण पावे, निताई चरण-द्वय राखे ॥

निताई-चरण सत्य, ताको ही सेवक नित्य, निताई-पद सदा करु आश।
नरोत्तम बड़ो दुखी, मो निताई करो सुखी, राखो निज चरणनि-पास॥

(१२)

मनः शिक्षाः—

अरे भाई ! भज मोरे गौर चरण।
न दुखहिं मैंने भजो, गृह-विष-कूप धँसो, दगध भये हैं पाँचो प्राण॥
ताप-त्रय निषानले, अहर्निशि हिया जले, देह सदा होय अचेतन।
इन्द्री भईं रिपु वश, गोरा-पद-पाश खसि बिमुख भयो है वुही धन॥
इन्हीं गौर-दयामय, छाँड़ि सब लाज भय, काय-मन लहुरे शरन।
पामर दुर्मति रहे, गोरा सो उद्धारि दिहे, सो भयो है पतित-पावन॥
गोरा-द्विज नटराज, बाँधत हृदय माँझ, करैगो को संसार-शमन।
नरोत्तमदास कहे, गोरा-सम कोउ नाहै, विना भजे देय प्रेम धन॥

(१३)

श्रीगौर-भक्त महिमाः—

गौराङ्ग जुगल-पद, जाके धन सम्पद, सो जाने भगति रस-सार।
गौर-लीला मधुमई, जाके श्रौन पैठि गई, हृदय निर्मल भयो तार॥
जाहि गौर नाम लेत, मन होत प्रेमोदित, ताही पै जाऊँ मैं बलिहारी।
गौराङ्ग गुणहिं झूरे, नित्य लीला जाहि स्फुरे सो जन भगति-अधिकारी॥
गौराङ्ग-संगि गणहीं, जो नित्य-सिद्ध मानहीं, सो जाय ब्रजेन्द्र-सुत पास।
श्रीगौड़-मण्डल भूमि, जोई जाने चिन्तामणि, ताको होय ब्रजभूमि वास॥
गौर-प्रेम-रसोदधि, जे डूबे तरङ्ग मधि, सो राधा-माधव अंतरंग।
गृह में या बन रहे, 'हा गौराङ्ग' टेरि कहे, नरोत्तम माँगे ताको संग॥

(१४)

पुनः प्रार्थनाः—[पयार छंद]

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु दया करो मोय।
तुम सो दयालु दीन जगत न होय॥

पतित पावन - हेतु तव अवतार ।
मो सम पतित प्रभु पावो नहिं और ॥
हा ! हा ! प्रभु नित्यानन्द ! प्रेमानन्द सुखी ।
कृपावलोकन करु मैं हूँ बड़ो दुखी ॥
दया करो सीता - पति अद्वैत गुसाईं ।
तव कृपा - बल पाऊँ चैतन्य - निताई ॥
हा ! स्वरूप सनातन रूप रघुनाथ ।
भट्ट - युग श्रीजीव हा ! प्रभु लोकनाथ ॥
दया करो श्री आचार्य प्रभो श्री निवास ।
रामचन्द्र सँग माँगे नरोत्तमदास ॥

(१५)

सपार्षद भगवद्विरह जनित विलाप:—

लाये प्रेम धन करि करुणा प्रचुर ।
सोई प्रभु कहाँ गये आचार्य - ठाकुर ॥
कहाँ मोर स्वरूप रूप कहाँ सनातन ।
कहाँ दास रघुनाथ पतित - पावन ॥
कहाँ मोर भट्ट - युग कहाँ कविराज ।
एकी काल कहाँ गये गोरा - नटराज ॥
पाषण कूटहुँ माथा अनल प्रवेशूँ ।
गौराङ्ग-गुणनि-निधि कहाँ गये पाऊँ ॥
उन सब संगी-सँग न कीन्हों विलास ।
सो संग न पाय रोवै नरोत्तमदास ॥

(१६

पुनः सदैन्य विलाप:—

हरि ! हरि ! बड़ो शेल मरमहि रह्यो ।
पाइकें दुर्लभ तनु, श्रीकृष्ण भजन बिनु, जनमु मेरो बिफल गयो ॥

ब्रजेन्द्र-नन्दन हरि, नवद्वीप अवतरि, सब प्रेमहि जगत भरयौ।
मोय से पामर मति, विशेष कठिन अति,तो सोऊ बिना करुणा रह्यौ॥
स्वरूप सनातन रूप, रघुनाथ भट्ट-युग, तिन में न भई मोरी मती।
दिव्य चिन्तामणि धाम,जोई वृन्दावन-स्थान,सो धाम ना करी है वसती॥
विशेष विषय-मति, नहीं है वैष्णव-रति, निरन्तर खेद उठे मना।
नरोत्तमदास कहि, जीअव उचित नहिं, श्रीगुरु-वैष्णव सेवा बिना॥

(१७)

वैष्णव-महिमा:--

ठाकुर-वैष्णव-पद, धरातल सम्पद, सुनो भाई! यहै एक मन।
जो आश्रय लेय भजे, ताहि कृष्ण नहीं तजे, और सब मरें अकारन॥
वैष्णव चरण-जल, प्रेम भक्ति देय बल, और कोई नहीं बलवन्त।
वैष्णव-चरण-रेणु, मस्तक भूषण बिनु, और नहिं भूषणनि अन्त॥
तीर्थ-जल दूत-गुण, पुराननि लिखो सुनो, होय सब भक्ति प्रवंचन।
वैष्णवनि पादोदक, सम नहिं तीर्थोदक, जाते होय वांछित पूरन॥
वैष्णवनि-संग मन, आनंदित अनुक्षन, सदा होय कृष्ण-परसंग।
दीन नरोत्तम क्रन्दे, हिया धैर्य नाहिं बँधे, मोरी दशा कब होगी भंग॥

(१८)

वैष्णव विज्ञप्ति:--

ठाकुर वैष्णव गण, करूँ यह निवेदन, मैं बड़ो अधम दुराचार।
दारुण संसार-निधि, तामें डुबायौ है विधि, केश धरि करो मोहि पार॥
विधि बड़ो बलवान, न सुने धरम ज्ञान, सदा ही करम पाश बाँधे।
न देखूँ तारण-लेश, जित देखूँ तित क्लेश,अनाथ कातर तासों कान्दे॥
काम-क्रोध-लोभ-मोह, मद अभिमान सह, आपुन-आपुन ठौर ताने।
मेरो येही छन मन, फिरै जैसे अंधजन, सुपथ-विपथ नहिं माने॥
नहिं लियो सत् मत, असत् मँझायो चित,तुम्हें पायेहू न कीन्हीं आश।
नरोत्तमदास कय, देखे सुने लागे भय, सो तारो तो लैकै निज पाश॥

(१६)

वैष्णव-विज्ञप्तिः—(पयार छन्द)

ए वार करुणा करो वैष्णव गुसाईं ।
पतित-पावन तुम बिना कोउ नाहीं ॥
कौन के निकट गये पाश दूर जाय ।
ऐसो जो दयालु प्रभु कैसे कहाँ पाय ॥
गंगा के तो पोंछे होयगो पावन ।
दर्शन पवित्र करै येई आपु गुन ॥
हरि-स्थानी अपराध तारे हरि - नाम ।
वैष्णवापराध नहीं कोउ ठौर - ठाम ॥
तुम्हारे हृदय सदा गोविन्द - निवास ।
गोविंद कहत "मेरे वैष्णव - उसास" ॥
प्रति जन्म करूँ आशा तव पद धूलौ ।
नरोत्तम कहे दया अपनाय बोलौ ॥

(२०)

वैष्णव-विज्ञप्तिः—

केहि रूप पाऊँ सेवा मैं हूँ दुराचार ।
श्रीगुरु - वैष्णव - रति न भई हमार ॥
अशेष माया में मन मगन जु भयो ।
वैष्णवनि लेश मात्र प्रेम ना भयो ॥
गल-फाँस देती फिरै माया की पिशाची ।
विषयनि भूलि अंध भयो अहर्निशि ॥
बिना जप किये यासों छुड़ाव न होय ।
साधु - कृपा बिना कोउ उपाव न सोय ॥
अदोष - दरशी प्रभु पतित उद्धार ।
एहि वार नरोत्तम करहु निस्तार ॥

(२१)

दैन्य बोधिका प्रार्थना:--

हरि ! हरि ! कैसो मेरौ करमु अभाग ।

विफल जीवन गयौ, हृदै यह शेल रह्यो, नाहिं भयो हरि-अनुराग ॥
जग्य दान तीर्थ स्नान,पुण्य कर्म जप ध्यान, सब गोयौ मोह अहंकार ।
बूझ्यो यही मनो मति, उपहास भयो अति, वस्त्र-हीन देह अलंकार ॥
साधु मुख कथामृत, सुने ते विमल चित, महीं भयो अपराध कारण ।
सतत असत संग, सकल सो भये भंग, कैसे करूँ होय जो शमन ॥
श्रुति-स्मृति सदा कहें, सुनते हू यहो रहें, 'हरि-पद अभय शरन' ।
जनम गँवायो सुखैं,कृष्ण नहिं बोल्यो मुखें,जा भाँति ना करी है भावना॥
राधा-कृष्ण दोनों पाय, तन-मन राखु ताय, दूरि अन्य बहाव वासना ।
नरोत्तमदास कहै, मोय भय और नाहै, तन-मन सोंप्यौ है आपुन ॥

(२२)

साधक देहोचित श्रीवृन्दावनवास लालसा:--

हरि ! हरि ! और कब ऐसी दशा होय ।

ये भव-संसार तजि, परम आनंद माँझ, और कब ब्रजभूमि जाँव ॥
सुखमय वृन्दावन, कब होगौ दरशन, सो मिलूँगो धूलि कबै गाय ।
प्रेम गद्‌गद् होय, कृष्ण नाम मय होय, रोऊँ बड़े जोर उभराय ॥
निभृत निकुन्ज जाय, अष्टाङ्ग प्रणाम नाय, गुहारूँ 'हा राधानाथ' ठेठ ।
जमुना के तीर कब, नीर जाय परसव, अँजुरिनु भरि पीऊँ पेट ॥
और ऐसौ कब होगो, श्रीरास मंडल जाँगो, कब भेटूँ रोय भरि बूक ।
बंशीवट छाया पाय, परम आनन्द माँय, लुढ़कि रहूँगो छाया टूँक ॥
कब गोवर्द्धन गिरि, देखूँगो नयन भरि, कब होगौ राधाकुंड वास ।
अमित-अमित कब, होगौ यह देह शव, कहे दीन नरोत्तमदास ॥

(२३) साधक देहोचित श्रीवृन्दावनवास लालसाः--

हरि ! हरि ! और कब पलटैगी दशा ।

करि यह सब वाम, जाऊँ वृन्दावन धाम, ये ही मन करि रह्यौ आशा ॥
धन जन पुत्र दारि, इनि सब दूरि डारि, होइकै इकान्त कब जाउँ ।
सब दुःख परि हरि, वृन्दावन वास करि, माधुकरि माँगि-माँगि खाउँ ॥
जमुना को जल जोई, अमृत समान सोई, कबै पीऊँ उदरि अघाय ।
कबै राधाकुण्ड जल, स्नान करि कुतूहल, श्यामकुण्डहि रहूँगो पड़िजाय ॥
भ्रमूँगो द्वादश वन, कृष्ण लीला जो-जो स्थान, प्रेम सों लगाऊँ लोट तहाँ ।
सो धाउँगो जनै-जनै, ब्रजवासी गन स्थानै, कहो और लीला-स्थान कहाँ ॥
भोजन - स्थान कब, नेत्र भरि दरसब, और जहाँ रहे उपवन ।
तिन मध्य वृन्दावन, नरोत्तमदास मन, आशा करे जुगल चरन ॥

(२४) साधक देहोचित श्री वृन्दावनवास लालसाः--

करुआ कोपीन दिये, फटौ कंथा गरे दिये, तियागूँगो सकल विषय ।
कृष्ण-अनुराग करि, ब्रजस्थ निकुञ्ज धरि, मैं करूँगो कबै निजालय ॥

हरि ! हरि ! कब मेरो होयगो सुदिन ।

फल-मूल वृन्दावन, खाऊँगो दिवावसान, फिरूँगो हुइकै उदासीन ॥
सीतल जमुन जल, स्नान करि कुतूहल, प्रेमाविष्ट आनन्दित होय ।
भुजा ऊँचे तोलि-तोलि, वृन्दावन डोलि-डोलि, गुहराऊँ कृष्ण बलि रोय ॥
देखिकै संकेत स्थान, जुड़ाऊँगो तप्त प्रान, प्रेमाविष्ट लोट-पोट होय ।
कहाँ राधा प्राणेश्वरी, कहाँ गिरिवरधारी, 'कहाँ नाथ !' टेरूँ प्रेमभोय ॥
माधवी कुंजनो परि, सुखे बैठि शुक सारि, कूजत हों राधाकृष्ण-रस ।
तरु(छाया)मूल बैठि तहाँ, सुनिकै जुड़ाऊँ हिया, कांदू कबै सुखनि दिवस ॥
श्रीगोविन्द-गोपीनाथ, श्रीमती राधिका साथ, देखूँगो रतन सिंहासन ।
दीन नरोत्तमदास, करत दुर्लभ आस, बीतेंगे कितेक योंही दिन ॥

(२५) साधक देहोचित श्रीवृन्दावनवास लालसाः—

हरि ! हरि ! कब होऊँ वृन्दावनवासी ।

निरखहुँ नयन - युगल रूप - राशी ॥
त्यागि हों शयन - सुख विचित्र - पलंग ।
ब्रज धूलि धूसरित कब होगौ अंग ॥
षटरस भोजन दूरहिं परि हरि ।
कब ब्रज जाय माँगि खाऊँ मधुकरि ॥
परिक्रमा करूँ घूमि - घूमि वन - वन ।
बिश्राम करूँगो जाय जमुना पुलिन ॥
ताप दूरि करूँगो शीतल वंशीवट ।
कब कुंज बैठूँ जाय वैष्णव निकट ॥
नरोत्तमदास कहै करि परिहार ।
कब ऐसी दशा होगी मुदित हमार ॥

(२६) सविलाप श्री वृन्दावनवास लालसा:—

और कब ऐसी दशा पाउँ । सब छोड़ि वृन्दावन जाउँ ॥
और कब श्रीरास मण्डल । लोटि-पोटि करूँ कुतूहल ॥
और कब गोवर्द्धन गिरि । देखूँगो नयन युग भरि ॥
श्यामकुण्ड राधाकुण्ड स्नान । करि कब जुड़ाऊँ पिरान ॥
और कब जमुना को जल । मज्जन होयगो निरमल ॥
साधु-संग वृन्दावन - वास । नरोत्तमदास करे आस ॥

(२७) श्रीरूप रति मञ्जर्य्यी विज्ञप्ति:—

राधाकृष्ण भजों भले जीवन - मरन ।
तिनि स्थान तिनो लीला देखों राति-दिन ॥
जो लीला जो स्थान करैं जुगल - किशोर ।
सखी - संग होय तहाँ रहहुँ विभोर ॥
श्रीरूप मंजरी पद सेवा निरुवधि ।
तिनि पाद - पद्म मेरे मंत्र महोषधि ॥

श्री रति मंजरी देवी मोपै करो दया।
अनुक्षण देवो निज पाद पद्म - छाया॥
श्री रस मंजरी देवी करो अवधान।
अनुक्षण देहु निज पाद पद्म ध्यान॥
वृन्दावन नित्य - नित्य युगल विलास।
प्रार्थना करत सदा नरोत्तमदास॥

(२८) सखी वृन्दे विज्ञप्तिः—

राधाकृष्ण प्रान मोर जुगलकिशोर।
जीवन - मरण गति और नहिं मोर॥
कालिन्दी के कूल केलि कदम्बनि वन।
रत्न - वेदी ऊपर बिठाय दोऊ जन॥
श्याम-गोरी अंग दोऊ चीया मलै गंध।
चमर ढुराऊँ कबै हेरि मुख चंद॥
मल्ली-माल गूँथि देऊँ दोऊ कण्ठ डोरि।
कपूर मिलाय धरूँ अधर तमोरि॥
ललिता-विशाखा आदि जिती सखी वृन्द।
तिनि आज्ञा मानि सेवूँ चरणारविन्द॥
श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु दास अनुदास।
सेवा अभिलाष करै नरोत्तमदास॥

(२९) स्वाभीष्ट लालसाः—

हरि! हरि! कब मेरौ होयगौ सुदिन।
केलि कौतुक रंग करूँगो सेवन॥

ललिता-विशाखा युत,जिति सखी करि यूथ,मण्डली बनाय दोऊ मेलि।
राई-कानू कर धरें, फिरि-फिरि नृत्य करें, निरखि जुड़ाऊँ कुतूहल॥
अलसि विश्राम-घर, गोवर्द्धन - गिरिवर, राई-कानू करेंगे शयन।
नरोत्तमदास वदे, जासों होय इनि पदे, अनुक्षन सतत सेवन॥

(३०) स्वाभीष्ट लालसा:—

गोवर्द्धन गिरिवर, केवल निर्जन थर, राई-कानू करेंगे शयन।
ललिता-विशाखा संग, सेवन करूँगो रंग, सुखमय अरुण चरण॥
कनक सम्पुट करि, कर्पूर ताम्बूल भरि, जोऊँगो वदन-कमल।
मणिमय किंकिणी, रतन-नूपुर बनी, पहिराऊँ चरण युगल॥
कनक कटोरा पूरि, सुगंध-चंदन धूरि दोनों ही के श्रीअंग बसाउँ।
गुरु-रूपा सखी बाँऐं, त्रिभंग भंगिम ठाऐं, चमर सों पवन डुराउँ॥
दोऊनि कमल आँखि, पुलकित होय देखि, दोऊनि के छुहूँ पद धाय।
चैतन्य को दास-दास, मन मात्र अभिलाष, नरोत्तम फुरत सदाय॥

(३१) स्वाभीष्ट लालसा:—

हरि! हरि! और कब ऐसी दशा पाय।
कबै वृषभानुपुर, अहीरिनी गोपी घर, कन्या के रूप जन्मूँ जाय॥
जावट सुगाम कबै, मेरौ हो विवाह जबै, बसती करूँगी कबै ताय।
सखिन परम श्रेष्ठ, जोई होगी तहाँ प्रेष्ठ, सेवन करूँगी ताके पाँय॥
वो हू कृपावती होय, अरुण-चरण दोय, करेगी मोये समरपन।
सफलित होगी दशा, पूरैगी मनहिं आशा, सेइ दोनौ जुगल-चरन॥
वृन्दावन दोऊ जन, चारों ओर सखीगन, सेवन करूँ मैं सविशेष।
सखीगन समावृत, नाना यन्त्र लिये हस्त, मन भरि देखूँ साभिलाष॥
दोनों चन्द्र-मुख देखि, जुड़ाऊँ तपित आँखि, नयन बहेगी अश्रु-धार।
वृन्दा के निदेश पाउँ, दोनों के निकट जाउँ, ऐसो दिन होयगो हमार॥
श्रीरूप मंजरी सखी, मोहि अनाथिनी लखि, दोनों के अरुण-पद राखें।
नरोत्तमदास भनै, प्रिय नर्म सखी गनै, कब मोहि दासी करि राखें॥

(३२) स्वाभीष्ट लालसा:—

हरि! हरि! और कब ऐसी दशा होउँ।
छाँड़िकै पुरुष भाय, प्रकृति बनूँ मैं जाय, दुहूँ अंग चन्दन लगाउँ॥
सँवारि कै चूड़ा बाँधूँ, गुंजाहार गरे साधूँ, नाना फूलि गूँथि लेऊँ हार।

पीताम्बर लाय अंग, पहिराऊँ सखी संग, मुख में ताम्बूल देऊँ और॥
दुहूँ रूप मनोहारी, हेरूँ मैं नयन भरि, सजाऊँ राई नील निचोल।
लाय नव-रत्न जरी, बेणी बाँधू रुचि भरि,मालती को हार गरे डोलि॥
ऐसी सुरूप माधुरी, देखूँ जो नयन भरि, मन जो करत अभिलाष।
जय रूप सनातन, देहो मुहि यही धन, निवेदत नरोत्तमदास॥

(३३) सिद्ध देहेन श्रीवृन्दावनेश्वर्य्यौ साक्षात् विज्ञप्तिः—

(राधा) हा! हा! प्राणेश्वरि! अबकै तौ मोपै दया करो।
दशननि तृण धरि, अंजुलि मस्तक धरि, हों अधम ये विनय करों॥
प्रिय सहचरी संग, सेवन करहुँ रंग, तो अंग सजाऊँ बड़ी साध।
राखो यही सेवा हित, निज पद सरसिज, प्रिय सहचरी गण माँझ॥
सुगंधित चन्दन, मणिमय अभिरन, कौषिक वसन नाना रंग।
येई सब सेवा जाकी, ऐसी बनि दासी वाकी, अनुक्षन रहूँ ताके संग॥
जल सुवासित करि, रतननि झारी भरि, कर्पूर बासित बीड़ा पान।
तिनकों सजाय थार, मालती लवंग हार, भक्ष्य द्रव्य नाना अनुपम॥
सखी कौ इंगित पाय, कबै सब देऊँ लाय, श्रीललिता के पास सम्हार।
नरोत्तमदास कहे, ऐसो सब मेरौ होवे, छिपि रहूँ सखिन पिछार॥

(३४) पुनस्तथैव विज्ञप्तिः—

अरुण कमल दल, सेज सजाऊँ भल, पौंहडाऊँ किशोर-किशोरी।
अलक-आवृत-मुख, मनोहर सरसिज, मटकत - श्याम हेम - गोरी॥
प्राणेश्वरि कबौ मोपै, होगी कृपा-दीठी।
राउर आयसु पाऊँ,कबै नाना फूल लाऊँ,दोऊनि की बानी सुनूँ मीठी॥
कस्तूरी तिलक भाल, सिंदुर सँवारूँ माँग, चन्दन लगाऊँ अंग गंध।
मालती के गूँथि फूल, हार गरे रहैं झूलि, भ्रमित - भ्रमर मकरन्द॥
ललिता जू कबै मोहि, व्यजन की सेवा देंहि, विजन डुराऊँ वायु-मंद।
जब सब श्रम-जलै, दुहूँ कलेवर टलें, निरखि हों परम आनन्द॥

कहै नरोत्तमदास, मोहि पाद-पद्म आस, माधुरी - सेवन - रस - पान।
हेरूँ ताहि दिनी वाट, कौन्हों चिन्ता जारे नाट, निरखि दोऊनि सुधा-प्राण॥

(३५) साभीष्ट लालसा:—

कुसुमित वृन्दावन, नाचें प्रिय शिखीगन, पिक-कुल झंकृत भ्रमर।
प्रिय सहचरी संग, गाऊँ जाय भरि रंग, निकुञ्ज-कुटीर मनोहर॥

हरि ! हरि ! मनोरथ फरैगौ हमारि।

दोनों की मंथर गति, कौतुकहि हेरूँ अति, अन्तरै पुलक अंग धारि॥
चारों ओर सखी घिरें, राधिका इशारों करें, तब एक चीर लेऊँ हाथ।
कुटिल कुंवल सब, बिखरे वदन खूब, कवरि विचित्र करूँ साथ॥
मृगमद मलयज, सब अंग लेपि धज, पहिराऊँ मनोहर हार।
चंदन-कुंकुम कर, तिलक सुभाल पर, हेरियहुँ मुख - सुधाकर॥
नील पट्ट जरी सारी, सजाय सुअंग धारी, पायन देऊँ रत्न मंजीर।
सुन्दर जलहि झारी, चरन छुवाऊँ प्यारी, पोंछूँ निज चिकुरनि धीर॥
कुसुम कोमल दले, सुसेज बिछाऊँ भले, दोऊँ निहि शयन कराउँ।
धवल चमर ल्याय, दुहुनि अमित-काय, धीरे-धीरे पवन डुराउँ॥
कनक सम्पुटि करि, ताम्बूल कर्पूर भरि, अरपि हों दोउन वदन।
प्रसादी अधर-सुधा, जब देंहि पान मुधा, पाऊँ करि अधिक जतन॥
श्रीगुरु करुणा सिंधु, लोकनाथ दीनबन्धु, मो दीन पै करौ अवधान।
राधाकृष्ण वृन्दावन, प्रिय-नर्म-सखी गिनि, नरोत्तम माँगे यही दान॥

(३६) पुन: साभीष्ट लालसा:—

हरि ! हरि ! कब मेरौ होयगो सुदिन।

गोवर्द्धन गिरिवरें, परम निभृत धरें, राई-कानूँ कराऊँ शयन॥
जल लियें झारी रम्य, चरन पखारूँ धन्य, पोंछूँ तिन्हें अपने चिकुर।
कनक सम्पुटि करि, ताम्बूल कर्पूर भरि, देऊँ तब दोऊनि अधर॥
प्रिय सखी गन संग, सेवन करहुँ रंग, चरण पलोटूँ निज कर।
दोऊनि कमल दीठि, कौतुकहिं देखूँ वीठि, दोउ अंग पुलक अन्तर॥

मल्लिका-मालती यूथी, नाना फूल माला गूँथि, कब देऊँ दोउनिके गरें।
सोने को कटोरा लेइ, कपूर चन्दन देइ, दोनों की देहनि कब धरें॥
और ऐसो होय कब, दोऊ मुख निरखब, लीला रस निकुंज शयन।
श्रीकुन्दलता के संग, सुकेलि कौतुक रंग, नरोत्तम करैंगो स्रवन॥

(३७) श्रीकृष्णे विज्ञप्तिः—

प्रभु हे! अब कै तो करहु करुणा।

जुगल चरण देखि, सफल करहुँ आँखि, ये ही है मेरी मनोकामना॥
निज पद सेवा देवौ, नहिं मोय उपेछिवौ, दोनों हो पाऊँ करुणा सागर।
दोनों बिना नहीं जानों, यही बड़ो भाग्यमानों, मैं हूँ बड़ौ पतित-पामर॥
ललिता आदेश पाइ, चरण सेवहुँ जाइ, प्रिय-सखा संग मन-मोद।
दुहूँ दाता शिरोमनि, अति दीन मोय मानि, देहु पद-पद्म मोरी गोद॥
पाय राधाकृष्ण पाँव, पुराऊँ मनहि घाव, दूरि सब होगी ये विकल।
नरोत्तमदास कहै, येई वाँछा सिद्ध होय, देह-प्राण सकल सफल॥

(३८) अथ आक्षेपः—

हरि! हरि! क्यों मोरे करम अनुरति।

विषयनि आँधी मति, है न सतसंग रति, कैसे यह पार होगौ पथ॥
स्वरूप सनातन रूप, रघुनाथ भट्ट युग, लोकनाथ सिद्धान्त सागर।
सुनतौ जो सब कथा, पुरतो मनहिं व्यथा, तब भलो होतौ अभ्यन्तर॥
जब गौर-नित्यानन्द, अद्वैतादि भक्तवृन्द, न दिया नगर अवतार।
तब नहीं पायो जन्म, अरे देखौ कैसो कर्म, मिथ्या-मात्र ढोये फिरौ भार॥
हरिदास आदि बोलि, महोत्सव करयो डोलि, नहीं देखौ सो सुख विलास।
कैसी मम दुःख कथा, जनम गँवायो वृथा, धिक-धिक नरोत्तमदास॥

(३९) लालसाः—

श्रीरूप मंजरी पद, सोई मोरे सम्पद, सोई मोरे भजन-पूजन।
सोई मोर प्राण-धन, सोई मोर आभरन, सोई मोरे जीवन-जीवन॥

सोई मोरे रसनिधि, सोई मोरे वाँछ सिद्धि, सोई मोरे वेद कौ धरम।
सोई व्रत सोई तप, सोई मोरे मन्त्र-जप, सोई मेरो धरम - करम॥
अनुकूल होइ विधि, सो पद सम्पद निधि, निरखहुँ इन दोऊ नैन।
सो रूप माधुरी राशि, प्राण-कुवलय शशि, प्रफुल्लित होय निशि-दिन॥
तव अदर्शन-अहि, गरल जरत देहि, चिर दिन तापित जीवन।
हा ! हा ! प्रभु करो दया, देहु मोहि पद छाया, नरोत्तम लई है शरन॥

(४०) (पयार छन्द)

सुनि आयो साधु मुख कहै सर्व जन।
श्री रूप कृपा तें मिलें जुगल चरन॥
हा ! हा ! प्रभु सनातन ! गौर परिवार।
सब मिलि वांछा पूर्ण करहु हमार॥
श्री रूपहिं कृपा जासों मोरे प्रति होय।
तिनि पदाश्रय होय होंय महाशय॥
प्रभु लोकनाथ कब मोय संग लेय।
श्रील रूप पादपद्म मोहि सोंपि देय॥
नरोत्तम कहै कब नर्म सखी गन।
अनुगत राखि मोय करेंगे शासन॥

(४१) यह नव दासी भला श्रील रूप चाहें।
ऐसे शुभ क्षण मेरे कौने दिन होहें॥
जो शीघ्र आज्ञा करेंगे 'दासि ! यहाँ आव।
सेवा कौ सुसज्जा कार्य त्वरित जुटाव॥'
आनंदित होय हृदै तिहिं आज्ञा-बल।
पवित्र मनहिं कार्य करहुँ तत् काल॥
सब सेवा सामिग्री धरि रत्न थारि।
सुवासित जल स्वर्न झारी माहिं पूरि॥

शीघ्र लैकें धरूँ जाय दोनों के सम्मुख।
ऐसी दशा पावै कब नरोत्तम सुख॥

(४२) श्री रूप पिछारी रहों सभय लुकाइ।
तब दोनों मेरे हित पूँछिलें सिहाइ॥
सदय हृदय दोनों कहें करि हाँसी।
कहाँ तुम पाई रूप! यह नव दासी॥
श्री रूप मञ्जरी सुनि दोऊनि कथन।
कहें मञ्जुलाली दीनी यह दासि आनि॥
याहि अति नम्र चित्त मैंने भलें जानि।
सेवा कार्य्य यहाँ दियो समीप सुठानि॥
या विधि स्पष्ट कहि दोऊनि सम्मुख।
नरोत्तमें सेवामें दियो तिननै राखि॥

(४३) हा-हा! प्रभु लोकनाथ! राखो पद द्वन्द।
कृपा दृष्टि चाहूँ जासों होय सुखानन्द॥
तवै सिद्धि मनोवाँछा, होऊँ पूर्ण-तृष्ण।
चैतन्य मिलहिं यहाँ वहाँ राधा-कृष्ण॥
तुम जो न करो दया को करेगो और।
मनो-वासा पूर्ण करौ अबकै तौ मोर॥
तीनों लोक माहिं और कोउ नाँय।
कृपा करि निज पद तरे देहु ठाँय॥
राधाकृष्ण-लीला पद गाऊँ राति-दिन।
नरोत्तम-वाँछा पूर्ण नाँय तुम बिन॥

(४४) लोकनाथ प्रभु! तुम दया करो मोरे।
राधाकृष्ण लीला जासों सदा चित्त फुरे॥
आप संग मिलि रहों सेवा-सखी तीर।
ये ही एक भाव सदा देत चित्त-पीर॥

सखिन-मैं-जेठी तिन्ह चरण उदार।
कबै मोहि सौंपहुगे सेवा-हित सार॥
तबहि वाञ्छित मेरी सहज पुराय।
"दोऊ-पद दोऊनि के सेऊँ सुख पाय"॥
श्री रूप मञ्जरि! सखि कृपा दृष्टि चाहुँ।
तापी नरोत्तमें सींचि सेवामृत प्याउ॥

(४५) हा हा! प्रभु करो दया करुणा सागर।
मिथ्या मायाजाल तनु दहतु हमार॥
कब होय ऐसी दशा सखी संग पाय।
वृन्दावनी-फूल गूँथि दोऊ पहिराउँ॥
सन्मुख रहहुँ कबै चमर ढुराउँ।
अगर-चन्दन गंध अंग-द्वय देउँ॥
सखी के आदेश कबै ताम्बूल जुगाउँ।
कुंकुम तिलक कबै दोऊनि लगाउँ॥
बिलास - कौतुक-केलि देखों इन नैन।
सिंहासन बैठे देखें चन्द्रमुख चैन॥
सदा सो माधुरी दीखै मन अभिलासे।
किते दिनैं होगी दया नरोत्तम दासे॥

(४६) हरि! हरि कबै ऐसी दशा होय मोर।
सेवहुँ दोहुँनि पद आनन्द-विभोर॥
भौंरा बनि सदा रहूँ तिनके चरन।
श्री चरनामृत सदा करूँ आस्वादन॥
ये ही आशा पूर्ण करौ जितो सखीगन।
तुम्हारी कृपा तें होगी वाञ्छित पूरन॥
बहु दिनी वाञ्छा, करौ पूर्ण जैसे होय।
सबै मिलि दया करौ होय कै सदय॥

सेवा-आश नरोत्तम क्रन्दे दिवा-निशि।
कृपा करि करौ मोहि अनुगत - दासि॥

(४७) जय जय श्रीकृष्ण चैतन्य नित्यानन्द।
जयाद्वैत चन्द्र जय गौर भक्त वृन्द॥
कृपा करि सबै मिलि करहु करुणा।
अधम पतित जनै ना करहु घृणा॥
तीनों लोक माहिं एक तव-पद-सार।
अन्य कोऊ गति नाँहि देख्यौ मन धारि॥
उन पद लाभ - आश खेद उठे मन।
व्याकुल हृदय सदा करहुँ क्रन्दन॥
कवन प्रकार पाऊँ ना पाऊँ सन्धान।
प्रभु लोकनाथ-पद ना रह्यो स्मरन॥
तुम्हीं तो दयालु प्रभु चाहि एक बार।
नरोत्तम-हृदयिक नशाओ अंधकार॥

(४८) माधुर विरहोचित दर्शन-लालसा:—

कबै कृष्णधन पाऊँ, हिये मे लुकाय पाऊँ, सिरावें तौ ये पापी पिरान।
सजाइकै निज हिया, बसाऊँ जो प्राण प्रिया, निरखहुँ सो चन्द्र बरान॥
हे सजनि! कबै मोर होयगो सुदिन।
उन प्राणनाथ संग, कबै फिरूँ भरि रंग, सुखमय जमुना पुलिन॥
ललिता-विशाखा लिये, जाऊँ तहाँ भेंट लिये, सजाइकै नाना उपहार।
सदय जो होय विधि, मेलें प्रिय गुणनिधि, ऐसो हू कै होगो भाग्य म्हार॥
बिधिना दारुण गति, प्रेम-हाट नाशी अति, सो बाचो ना ताकी तिलछार।
कहै नरोत्तमदास, का मेरी जीवन-आस, गयो छाँड़ि ब्रजेन्द्र कुमार॥

(४९) पुनस्तथैव लालसा:—

अबकै जो देखि पाऊँ जुगल चरण।
हिय बीच राखि तिन्हें जुड़ाऊँ पिरान॥

तिन्हें बिनु देखे मोरें मन बड़ी ताप।
अगिनि बैठहुँ किधों कूदूँ जल झांपि॥
मुख श्रम-कण पोंछि पान-बीरी देंहुँ।
श्रम-हारी बैना झलि चोया-मलै देंहुँ॥
वृन्दावन-फूल गूँथि देंहुँ बड़ हार।
सजाय बनाऊँ चूड़ा केशनि सम्हार॥
माथे पै तिलक देउँ चँदन कौ चंदा।
नरोत्तमदास कहै पिरीति कौ फंदा॥

(५०) आक्षेपः—

अरे सोई तो गोरा मैं ने भजि ना जान्यौ।
जो प्रेम-रतन धन निदरि हिरान्यौ। ध्रु०॥
मो निधनी करि जतन तियागौ धन।
निज-कर्म-दोष डूबौ मैं खुदि आपुनि॥
सत-संग छाँड़ि कियौ असत विलास।
लागो ताही कारण ये कर्म-बन्ध-फाँस॥
विषय-विषम-विष सततहि भख्यौ।
गोरा-कीरतन-रस मगन ना चख्यौ॥
प्राण राखि कहो भला कहा सुख लह्यौ।
अरे नरोत्तमदास! मरि क्यों न गयौ॥

(५१)

वृन्दावन रम्य स्थान, दिव्य चिन्तामणि धाम, रतन मन्दिर मनोहर।
आवृत कालिन्दी नीरें, राजहंस केलि करें, तामें शोभै कनक-कमल॥
ताके मध्य हेम पीठ, अष्ट दल सुवेष्टित, आठों दल प्रधाना नायका।
ताके मध्य रत्नासन, बैठे भलें दोई-जन, श्याम संग सुन्दरी राधिका॥
सो रूप लावण्य राशि, अमृत परत खसि, हास-परिहास सम्भाषनें।
नरोत्तमदास कह, नित्य लीला सुखमय, सदा ही फुरहु मोरे मनै॥

(५२)

कदम्ब तरुहि डार, नबि रहीं भूमि भार, फूले हैं सुमन झौंरा-झौंरा ।
परिमल छायौ तिन्ह, सकल सो वृन्दावन, करि रहे केलि भौंरी-भौंरा ॥
राई - कानू बिलसत रंग ।
कैसौ रूप लावण्य ! वैदग्ध-खानि देवन्य, मणिमय आभरण अंग ॥
राधा कौ दाहिन-कर, धरि प्रिय गदाधर, मधुर-मधुर चलें पाय ।
आगे-पाछे सखि गन, करें फूल बरिषन, कोउ सखि चमर डुलाय ॥
पराग-धूसर थल, चन्द्र करै सुशीतल, सो मणिमय बेदी ऊपरै ।
राई-कानू कर जोरि, नृत्य करें फिरि-फिरि, परस पुलक तनु भरै ॥
मृगमद चन्दन, लीन्हैं कर सखिगन, बरषत फूल-गन्ध राजै ।
श्रम जल विन्दु विन्दु, शोभा लहे मुख इन्दु मुरली अधर नहिं बाजै ॥
रस, हास, सुविलास, सकल मधुर भास, नरोत्तम मनोरथ करै ।
दोनों के विचित्र बेष, कुसुम रचित केश, लोचन-मोहन लीला करै ॥

(५३)

आजु रस - बादर निशि ।
प्रेम छकित सब वृन्दावन वासी ॥
श्याम - घन बरसहिं प्रेम-सुधा-धार ।
संग - रँगीली राधा बिजुरी-संचार ॥
प्रेम पिछेलौ पथ गगन भयौ बंक ।
मृग मद चन्दन कुंकुम भयौ पंक ॥
दिशा विदिशा न पावै प्रेम बीची पैठि ।
पैरिवो न जानि नरोत्तम डूब्यो ठेठ ॥

(५४)

अहो हे नागरवर, सुनो हे मुरलीधर, राउरि चरण निवेदहुँ येह ।
मख मणि स्वचरण, चन्द्रहार गुँथे जनु, भले शोभैं मोरे कण्ठ देहु ॥

श्रीदाम सुदाम संग, जाहु बनै भरि रंग,तब दौरि द्वारि लागूँ जाहि।
मन करै संग जाउँ, गुरु-जन भय खाउँ,दीठि रहे तुही पाउँ चाहि॥
नव-मेघ चाहूँ पिये, बन्धु तुम अड़े हिये, केशहू ना बाँधे घबराय।
रसोई मैं बैठूँ जाय,बन्धु ! तव गुण गाय,धुँआँ मिस रोऊँ मैं अघाय॥
मणि नाहौ माणिक नाहौ, आँचल जो बाँधे रहौ,
फल नाहौ केशनि सजाइये।
नारी कौ उपाय नाहीं, सर्व गुण तुव पाहीं,फिरती जो देश-देश लिये॥
अगुरु चंदन बनूँ, तुव अंग भिदि रहूँ, पसीना पसीजि चूऊँ पाँय।
कैसी मोरी मन साध,वामन ज्यों चन्द्र हात,विधिना पुरावें जो सिहाय॥
नरोत्तमदास कह, सुनो एहो दयामय, तू मो पै जिनि छाँड़ियो दाया।
जा दिन तुमहिं भावे,ये मेरे पिरान जावें,ता दिना तो दीजो पद छाया॥

इति श्रीनरोत्तमदास ठाकुर महाशय कृत
(बँगला) प्रार्थना का
नागरी भाषानुवाद
समाप्त।

लेखक—श्री प्रियाचरण शरण,
श्री झाड़ु मण्डल, गोविन्द घाट,
वृन्दावन(मथुरा)

अथ ग्वालिनी झगरो

बरसानै की भाम काम कुंजन अभिमानी।
बसत गोपकी वाँह नगर कीरति हम जानी॥
जिन में मध्य सुहागिली श्रीराधा उनिकौ नाव।
मन मै मैकाकी करैं ढिग वरसानौ गाँउ॥
दान दधि पै लगे॥१॥

ह्वै गई भेट गुपाल लाल सुनि कर गिरि गोवर्धन की घाटि।
ताकत सतियानि मांगनि हारत पांति॥
चोरि चोरि दधि वेचियौ सदा हमारैं मारि।
नित ग्वालिनि झगरौ परै आजि लेहि निरवारि॥
दान दधि पै लगे॥२॥

ढोठा किनि लिखि दीयौ दान छाप कायैं करि पाइं।
वन में करत अनीति नित उठि रोकै नारि पराइं॥
दान दधि पै नहीं॥३॥

इतनैंती भई हम मारग आवत जाति।
गोरस दान नहीं सुन्यौं सु कहौ कान्ह इतरात॥
दान दधि पै नहीं॥४॥

गुजरी कंस के वंस चकहै तेरी छाती।
वेसरि सुरठ लागियौ सो राच्यौ परम सनेह॥
मानौ भोर गभवगि मन चाटन उतरि॥
ऐसौ दान दधि पै नहीं॥५॥

गोरस दान नहीं सुन्यौं काहू औरै ठानि।
सब ग्वालिनि जब थकि रही सोचत सगरौ साथ।
ढार ढार करि काढियैं सुपाथर तनको हाथ॥
दान दधि पै नहीं॥६॥

गुजरी अब देखौ दधिकुंन किरवाढि मिटि।
देहौ ग्वालिनि दान हमारौ देहु ग्वाल सिखाय सवन की॥
होत है जूठ॥७॥

बिना बौंहनी दैहौ ढोठा प्रात समै की नाँहि ।
सकत सनैंना होय ढोठा सिर पर भारी मट ॥
दान दधि पै नहीं ॥८॥
गुजरी मटकी धरौ उतारि बात कहा कहैरी ।
सोय गोवर्धन मथुरा बीच दुहाई मेरी ॥
गौ चराऊं मेलिकैं सहुँ नंदरायकौ पूत ।
मोपै होय पर जायगि सु उरझ्यौ नौ मन सूत ॥
दान दधि पै लगे ॥
ढोठा किनि लिखि दिय कुमर होत हौ राते ताते ।
नंद घर सब वाढ़िय सबहि जाति अहीर ॥
चंचल आये रावरे तेरे माई बाप ॥
कठिन कंस मथुरा बसै दुवकत फिरौगे आय ॥
दान दधि पै नहीं ॥९॥
गुजरी कंसै डारौं मारि कैं सुगहिन सिंहाऊँ ।
उग्रसैन कौ राज-तिलक दै मथुरा आऊं ॥१०॥
कहै कान्ह सुनि ग्वालिनि मेरे दिए अ अगन के वुंट ।
दिना चारि में देखियौ सु किमकर बैठें ऊंठ ॥
दान दधि पै नहीं ॥११॥
कब के बाबा नन्दजी कबकी माता जसोधा रानि ।
अधर नदि उजाड़ियौ सुछांड्यौ मथुरा देस ॥
दान दधि पै नहीं ॥१२॥
जब यहै लालनैं दगरौ ठान्य बात कहि दो प्रेम की ।
बात कही मन मांनियौ ब्रज में राज सदा करौ ॥
माधौदास बलि जाऊँ ॥१३॥

सानुवाद संस्कृत भाषा में—

१.	अर्च्चाविधिः	(संगृहीत)	।)
२.	प्रेमसम्पुटः	(श्रीविश्वनाथचक्रवर्त्तीजीकृत)	।)
३.	भक्तिरसतरङ्गिणी	(श्रीनारायणभट्टजीकृता)	१)
४.	गोवर्द्धनशतक	(श्रीविष्णुस्वामी संप्रदायाचार्य्य श्रीकेशवाचार्य्य कृत)	।)
५.	चैतन्यचन्द्रामृत और सङ्गीतमाधव	(श्रीप्रबोधानन्द-सरस्वतीजी कृत)	१।)
६.	नित्यक्रियापद्धतिः	(संगृहीत)	॥=)
७.	ब्रजभक्तिविलासः	(श्रीनारायणभट्टजी कृतः)	२॥)
८.	निकुञ्जरहस्यस्तवः	(श्रीमद्रूपगोस्वामी कृत)	
९.	महाप्रभुग्रन्थावली	(श्रीमन्महाप्रभुमुखपद्मविनिर्गता)	।—)
१०.	स्मरणमङ्गलस्तोत्रं	(श्रीमद्रूपगोस्वामिजीकृत)	॥=)
११.	नवरत्नं	(श्रीहरिदासव्यासजी कृत)	=)।
१२.	श्रीगोविन्दभाष्यं	(श्रीपादबलदेवजी कृत)	४॥)
१३.	ग्रन्थरत्नपञ्चकम्		१॥)
(१)	श्रीकृष्णलीलास्तवः	(श्रीपादसनातनगोस्वामि कृतः)	
(२)	श्रीराधाकृष्णगणोद्देशदीपिका	(श्री श्रीरूपगोस्वामिजी कृता)	
(३)	श्रीगौरगणोद्देशदीपिका	(श्रीकविकर्णपूरजी कृता)	
(४)	श्रीब्रजविलासस्तवः	(श्रीश्रीरघुनाथदासगोस्वामिजी कृत)	
(५)	श्रीसंकल्पकल्पद्रुमः	(श्रीविश्वनाथ चक्रवर्तीजी कृत)	
१४.	श्रीमहामन्त्रव्याख्याष्टकम्	(सञ्चित)	
१५.	ग्रन्थरत्नषट्कम्	(सञ्चित)	॥)
१६.	श्रीगोवर्द्धनभट्टग्रन्थावली		
१७.	सहस्रनामत्रयम् अथवा ग्रन्थरत्ननवकम्		
१८.	श्रीनारायणभट्टचरितामृतम्	(श्रीजानकीप्रसाद गोस्वामिकृत)	॥)
१९.	उद्धवसन्देशः	(श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचितः)	।=)
२०.	हंसदूतम्	(श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचितः)	

गौड़ीयग्रन्थगौरव:-

ब्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

१.	गदाधरभट्टजी की वाणी		॥)
२.	सूरदासमदनमोहनजी की वाणी		॥)
३.	माधुरीवाणी	(माधुरीजी कृता)	॥=)
४.	बल्लभरसिकजी की वाणी		।=)
५.	गीतगोविन्दपद	(श्रीरामरायजी कृत)	।)
६.	गीतगोविन्द	(रसजानिवैष्णवदासजी कृत)	।)
७.	हरिलीला	(ब्रह्मगोपालजी कृता)	=)
८.	श्रीचैतन्यचरितामृत	(श्रीसुबलश्यामजी कृत)	५॥)
९.	वैष्णववन्दना (भक्तनामावली)	(वृन्दावनदासजी कृता)	=)
१०.	विलापकुसुमाञ्जलि	(वृन्दावनदासजी कृता)	।)
११.	प्रेमभक्तिचन्द्रिका	(वृन्दावनदासजी कृता)	।)
१२.	प्रियादासजी की ग्रन्थावली		।=)
१३.	गौराङ्गभूषणमञ्जावली	(गौरगनदासजी कृता)	।)
१४.	राधारमणरसमागर	(मनोहरजी कृता)	।)
१५.	श्रीरामहरिग्रन्थावली	(श्रीरामहरिजी कृता)	।-)
१६.	भाषाभागवत (दशम, एकादश, द्वादश)	(श्रीरसजानि-वैष्णवदासजी कृत)	
१७.	श्रीनरोत्तमठाकुरमहाशय की प्रार्थना		॥)
१८.	संप्रदायबोधनी	(कविवरमनोहरजीकृता)	=)

पुस्तक मिलने का पता—

मोतीराम गुप्ता, भगवान भजन आश्रम,

बल्लीगंज, (वृन्दावन)

मुद्रक—रमनलाल बंसल, पुष्पराज प्रेस, मथुरा।